सांध्य दैनिक

श्रीकंचनपथ

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534

डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./ दुर्ग /94/2023-25

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच

वर्ष- 15 अंक - 300 | www.shreekanchanpath.com | संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत- स्व. श्रीमती रजनी अग्रवाल | भिलाई, सोमवार 12 अगस्त 2024 | पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

खास-खबर

पूजा खेडकर को हाईकोर्ट से मिली राहत

नई दिल्ली। धोखाधड़ी से दिव्यांग कोटा का लाभ हासिल करने की आरोपी भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) की पूर्व प्रशिक्षु अधिकारी पूजा खेडकर को दिल्ली हाईकोर्ट से राहत मिल गई है। खेडकर की अग्रिम जमानत याचिका पर हाईकोर्ट ने दिल्ली पुलिस और यूपीएसी को नोटिस जारी किया है और जवाब मांगा है। अब पूजा खेडकर की अग्रिम जमानत पर 21 अगस्त को सुनवाई होगी। तब तक हाईकोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है।

अग्रिम जमानत के लिए खेडकर की याचिका पर न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई की। वहीं, खेडकर की तरफसे वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा, जबकि यूपीएससी की तरफ से नरेश कौशिक उपस्थित हुए। अदालत फिलहाल इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रही है कि हिरासत में पूछताछ जरूरी है या नहीं। वहीं, कौशिक ने तर्क दिया कि खेडकर का आईएएस में प्रवेश करना उनकी चालाकी भरी प्रकृति को उजागर करता है, इसलिए उनसे हिरासत में पूछताछ उचित है। यह देखते हुए कि तत्काल गिरफ्तार किया जाना जरूरी नहीं है, अदालत ने जांच एजेंसी को निर्देश दिया है कि जब तक मामला विचाराधीन है, उन्हें गिरफ्तार न किया जाए।

मोबाइल और कैश लेकर दो बदमाश हो गए थे फरार, पुलिस ने दोनों को ऐसे दबोचा

रायपुर। राजधानी में गुंडे बदमाशों का हौसले बुलंद है। बदमाश लूट चोरी मारपीट की घटना को लगातार अंजाम दे रहे हैं। ऐसे ही एक मामला नया बस स्टैंड भाटागांव से सामने आया है। आरोपियों ने मोबाइल और कैश लेकर फरार हो गए। लूट के आरोपी साहिल खान और अकबर खान को चोरी के एक नग मोबाइल और नगदी तीन हजार रुपए साथ ही एक स्कूटी के साथ पुलिस ने रंगेहाथ गिरफ्तार किया है।

प्रार्थी रणवीर सिंह ने थाना टिकरापारा रायपुर में रिपोर्ट दर्ज कराया। उसने रिपोर्ट में बताया कि 10 अगस्त की सुबह आठ बजे नया बस स्टैण्ड भाठागांव के पीछे तालाब के पास साहिल खान और अकबर खान नाम के दो व्यक्ति एक्टीवा में आकर उनके जेब से एक नग मोबाइल और नगदी तीन हजार को लूट कर फरार हो गये। इस पर अपराध कमांक 633/24 धारा 309 (6) भान्याय संहिता के तहत अपराध पंजीबद्ध कर घटना के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया।

मामले में थाना प्रभारी टिकरापारा ने संयुक्त टीम तैयार किया। टीम के सदस्यों द्वारा घटना स्थल पहुंचकर आसपास के लोगो से पूछताछ कर तकनीकी सहयोग से दोनो आरोपियों का नाम पता का पूर्ण जानकारी एकत्रित कर फरार आरोपियों का पता तलाश शुरू किया। आरोपियों के सकूनत पर दबिश देने पर आरोपी सकूनत से फरार थे। मुखबिरों के सहयोग से आरोपियों के छपने के संभावित स्थानों पर दबिश देकर दोनो आरोपी को पकड़ा गया। पुलिस ने साहिल खान 23 साल और अकबर खान 22 साल को गिरफ्तार कर पूछताछ कर उनके कब्जे से लूटे हुए प्रार्थी का मोबाइल एक नग और नगदी तीन हजार के साथ ही घटना में प्रयुक्त स्कूटी को भी जब्त किया गया है।

साय सरकार रोकेगी हाथी-मानव द्वंद्व!

विश्व हाथी दिवस पर आज शाम होगी प्रोजेक्ट एलीफेंट के स्टीयरिंग कमेटी की अहम् बैठक

श्रीकंचनपथ न्यूज़ डेस्क

रायपुर। छत्तीसगढ़ देश के उन चुनिंदा राज्यों में शामिल है, जहां हाथी-मानव द्वंद्व की घटनाएं ज्यादा होती है। इससे जान-माल के नुकसान के साथ ही हाथियों पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों में हाथियों द्वारा सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतारा गया है। हालांकि दूसरा पहलू यह भी है कि लोगों के सुरक्षात्मक प्रयासों से हाथियों को भी नुकसान हुआ है। आज विश्व हाथी दिवस पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पहल पर प्रोजेक्ट एलीफेंट की स्टीयरिंग कमेटी की बैठक होने जा रही है। इस अहम् बैठक में निष्कर्ष निकाला जाएगा कि मानव-हाथी द्वंद्व को कैसे रोका जाए। हाथियों से होने वाले जन-धन के नुकसान से कैसे बचा जाए। आयोजन आज शाम साढ़े 7 बजे लाभांडी स्थित एक निजी होटल में किया गया है।

विश्व हाथी दिवस के अवसर पर प्रोजेक्ट एलीफेंट की स्टीयरिंग कमेटी की 20वीं बैठक आज होने जा रही है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय वनमंत्री भूपेन्द्र यादव होंगे, वहीं अध्यक्षता मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय करेंगे। राज्य के वनमंत्री केदार कश्यप, केन्द्रीय वन महानिदेशक व भारत सरकार के विशेष सचिव जितेन्द्र कुमार के साथ ही एलीफेंट एक्सपर्ट इस दौरान उपस्थित रहेंगे। मुख्यमंत्री श्री साय पूर्व में रायगढ़ सांसद भी रह चुके हैं। वे स्वयं जशपुर जिले के ग्राम बगीया जैसे वनांचल क्षेत्रों से आते हैं, जहां हाथियों का अधिक विचरण होता है। वनांचल क्षेत्र में रहते हुए वे स्वयं वनवासियों की जीवन शैली तथा वनों पर उनकी निर्भरता से भलीभांति परिचित हैं। राज्य में मानव-हाथी द्वंद की समस्या के कारण हाथियों द्वारा फसल नुकसान, जनहानि तथा सम्पति की हानि की जाती है। इन सारी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विशेषकर वनवासियों के हित में कार्य करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर में विश्व हाथी दिवस के परिपेक्ष में प्रोजेक्ट एलीफेंट के तहत मीटिंग का आयोजन किया जा रहा है।

कमेटी से राज्य में मानव-हाथी द्वंद की रोकथाम, हाथियों से होने वाले जन-धन के नुकसान के बेहतर प्रबंधन के संबंध में सुझाव प्राप्ति हेतु स्टीयरिंग कमेटी में भारत सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर उच्च अधिकारी, साथ ही वन्यप्राणी विशेषज्ञ, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, कृषि, विद्युत एवं रेलवे विभाग के अधिकारी सदस्य हैं। केन्द्रीय मंत्री द्वारा हाथी मित्र दल, समाजसेवा संगठन एवं वन्यप्राणी क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले जनसामान्य नागरिकों से छत्तीसगढ़ के परिपेक्ष में चर्चा करेंगे। साथ ही विभिन्न तकनीकों के माध्यम जैसे,- ड्रोन तकनीक, इन्फारमेंशन तकनीक के माध्यम से हाथियों के विचरण पर लगातार नजर रखे जाने के संबंध में चर्चा होगी। कार्यक्रम में प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख छत्तीसगढ़ व्ही. श्रीनिवास राव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) सुधीर कुमार अग्रवाल सहित राज्य के भारतीय वन सेवा के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहेंगे।

11 साल में मारे गए 600 ग्रामीण

पिछले 1 दशक में मानव-हाथी द्वंद्व की घटनाओं में अप्रत्याशित रूप से इजाफा हुआ है। विगत 11 वर्षों में ही करीब 600 लोगों की जान हाथियों ने ली है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद से अब तक के आंकड़ों पर गौर करें तो कुल 221 हाथियों की भी मौत हुई है। इनमें से 33 फीसद हाथियों की मौत करंट लगने हुई है। ऐसा नहीं है कि पूर्ववर्ती सरकारों ने हाथियों को नियंत्रित करने और जंगलों से गांवों की ओर आने से रोकने की कोई कोशिश नहीं की। हाथी गांवों के भीतर न आ पाएं, इससे रोकने के लिए सोलर फेसिंग का प्रयोग किया गया, जिसमें हल्का करंट रहता है। वहीं गांवों के आसपास मधुमक्खियों के छत्ते लगाने की भी योजना थी, ताकि हाथी गांवों से दूर रहें। अस्थाई ट्राजिस्ट कैम्प की भी एक योजना लाई गई, जिसके तहत वन विभाग जंगल में ही हाथियों को चारा देता था। बिगडैल हथियों को रोकने के लिए कुमकी हाथी भी लाए गए। रेडियो कॉलर की भी खरीदी हुई। खेतों में पुतला खड़ा करने की सोलर बजुका योजना भी नाकाफी रही तो हाथियों के गले में घंटी बांधने और गजरात वाहनों की खरीदी भी कामयाब नहीं हो पाई।

15 फीसद है द्वंद्व का अनुपात

वन विभाग के मुताबिक, राज्य में 350 से ज्यादा हाथी मौजूद हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान ने राज्य में हाथियों को लेकर अध्ययन के बाद दावा किया है कि देश में हाथियों की कुल आबादी में से एक प्रतिशत हाथी छत्तीसगढ़ में है, लेकिन देश के अन्य राज्यों की तुलना में छत्तीसगढ़ में मानव-हाथी द्वंद्व का अनुपात 15 प्रतिशत है। जानकार राज्य में मानव-हाथी द्वंद्व बढ़ने की वजह राज्य में खंडित वनक्षेत्र के साथ लोगों की वनों पर आश्रित होना मानते हैं। हाथियों को जंगल के भीतर ही रोकने के लिए चारा व पानी का प्रबंध यदि समुचित रूप से हो तो संभवतः हाथी गांवों की ओर न आएं। वन क्षेत्र में बढ़ता अतिक्रमण भी हाथियों के साथी बनने में बाधक रहा है। हाथियों से होने वाले जान-माल के नुकसान को कम करने जैली वर्तमान समय में सारी गतिविधियां बंद हो चुकी है। हाथियों की निगरानी हो रही है लेकिन इससे जानमाल का नुकसान कम नहीं किया जा सकता।

दीर्घकालिक योजनाओं की दरकार

हाथियों को गांव व ग्रामीणों से दूर रखने के लिए दीर्घकालिक योजनाओं की दरकार है। ऐसा नहीं होने की हाथी-मानव द्वंद्व पर नियंत्रण मुश्किल कार्य है। छत्तीसगढ़ में जंगली हाथियों की मौतों का मुख्य कारण बिजली करंट है। पहले के वर्षों में प्रभावित क्षेत्र में योजनाबद्ध तरीके से करंट से हाथियों को मारने की घटनाओं को छोड़ दें तो शेष घटनाएं लापरवाही का परिणाम हैं। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या हाथी विचरण क्षेत्रों में कम ऊंचाई की बिजली लाइन हैं। स्थिति यह है कि जंगली हाथियों के सूड़ ऊपर उठाते ही बिजली तार के संपर्क में भी आ रहे है। करंट लगने से तंदुरुस्त हाथी की भी तत्काल मौत हो रही है। विशेषज्ञों के मुताबिक, जंगली हाथियों के आबादी क्षेत्रों में प्रवेश करने के कारण ही जानमाल का नुकसान होता है। ऐसे में यदि हाथियों को जंगल में रोकने में कामयाबी मिलती है तो नुकसान कम होगा। वहीं, अभ्यारण्य , राष्ट्रीय उद्यान और बड़े क्षेत्रफल वाले वनों में हाथियों के पसंदीदा आहार के रूप में चारा की उपलब्धता सुनिश्चित करके भी इसे रोका जा सकता है। जंगली हाथी विचरण व रहवास क्षेत्र में तालाब, स्टापडेम व प्राकृतिक जलस्रोतों का विकास करना भी एक समाधान है। इसके अलावा हाथी रहवास क्षेत्र के लिए ऐसे वनक्षेत्रों का चिन्हांकन जरूरी है, जहां आबादी कम या न हो।

हिंडनबर्ग के आरोपों को नकार गिरकर संभला बाजार

सेंसेक्स 378 अंक चढ़ा, निफ्टी 24400 पार

नई दिल्ली। हिंडनबर्ग रिसर्च की ओर से अदाणी प्रकरण में सीधे सेबी प्रमुख पर आरोप लगाने के बाद घरेलू शेयर बाजार में सोमवार को गिरावट के साथ कारोबार की शुरुआत हुई। प्रमुख भारतीय बेंचमार्क इस दौरान गिरावट के साथ कारोबार करते दिखे। जबकि अदाणी समूह के शेयर 7 प्रतिशत तक लुढ़क गए। हालांकि, थोड़ी देर की गिरावट के बाद बाजार का भरोसा लौटा और बेंचमार्क इंडेक्स हरे निशान पर लौट आए।

सुबह 9 बजकर 18 मिनट पर सेंसेक्स 294 अंक या 0.37 प्रतिशत टूटकर 79,411 पर कारोबार करता दिखा। दूसरी ओर, में निफ्टी 85 अंक या 0.35 प्रतिशत की गिरावट के साथ 24,282 के स्तर पर कारोबार होता दिखा। अमेरिकी शॉर्टसेलर हिंडनबर्ग रिसर्च ने सेबी प्रमुख माधबी पुरी बुच और उनके पति धवल बुच पर उन ऑफ शोर फंड्स में निवेश करने का आरोप लगाया है, जिनका इस्तेमाल अदाणी समूह के शेयरों में तेजी लाने के लिए किया गया था। हालांकि, बुच दंपती ने आरोपों को नकारते हुए कहा है कि सभी निवेश की जानकारी का खुलासा नियमों के अनुसार किया गया है।

निफ्टी के शेयरों में अदाणी एंटरप्राइजेज व अदाणी पोर्ट्स के शेयर सोमवार को शुरुआती कारोबार के दौरान 4 प्रतिशत की गिरावट के साथ टॉप लूजर्स रहे। एनटीपीसी, पावर ग्रिड और टाटा स्टील के शेयर भी लाल निशान पर खुले। वहीं दूसरी ओर, ग्रासिम, ओएनजीसी, एशियन पेंट्स, ब्रिटानिया और एचडीएफसी बैंक के शेयर हरे निशान पर कारोबार करते दिखे। सेक्टरवार देखें तो निफ्टी मीडिया 1 प्रतिशत तक गिर गया। निफ्टी पीएसयू बैंक में 0.7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी ऑटो, फाइनेंशियल सर्विसेज, आईटी, मेटल, फार्मा और ऑयल व गैस सेक्टर के शेयर भी कमजोरी के साथ खुले। व्यापक बाजार में निफ्टी मिडकैप 100 0.24 प्रतिशत की गिरावट के साथ खुला वहीं स्मॉलकैप 100 सपाट खुला।

कोलकाता के अस्पताल में महिला डॉक्टर की हत्या का मामला हाईकोर्ट पहुंचा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में एक महिला डॉक्टर की हत्या मामले में भाजपा नेता और कलकत्ता हाई कोर्ट के वकील कौस्तव बागची ने अदालत में एक याचिका दायर की है। उन्होंने इस मामले में सीबीआई जांच की मांग की और सभी मेडिकल कॉलेजों, अस्पतालों और रेस्ट रूम में उचित सुरक्षा के साथ सीसीटीवी कैमरा लगाने का अनुरोध किया।

बता दें कि कोलकाता के आरजीकर मेडिकल अस्पताल में महिला डॉक्टर की हत्या के बाद मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर और छात्र सड़क पर उतरकर लगातार विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

इस पूरे मामले की मजिस्ट्रेट जांच की मांग को लेकर जूनियर डॉक्टर्स, प्रशिक्षु और स्नातकोत्तर प्रशिक्षु हड़ताल पर हैं। इस भयावह घटना के बाद आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल के प्रिंसिपल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है।

पीएम मोदी ने पेरिस ओलंपिक में हिस्सा लेने वाले भारतीय दल को दी बधाई

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेरिस ओलंपिक में हिस्सा लेने वाले भारतीय दल को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने इन खेलों के दौरान भारतीय दल के प्रयासों की सराहना और उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। भारत ने पेरिस ओलंपिक में एक रजत और पांच कांस्य सहित कुल छह पदक जीते थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा, पेरिस ओलंपिक का समापन हो रहा है और मैं इन खेलों में हिस्सा लेने वाले समूचे भारतीय दल के प्रयासों की सराहना करता हूं। सभी एथलीटों ने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया और सभी भारतीयों को उन पर गर्व है। हमारे खिलाड़ियों को आने वाले टूर्नामेंटों के लिए शुभमकामनाएं।

पेरिस ओलंपिक के समापन समारोह में महिला निशानेबाज मनु भाकर और भारतीय हॉकी टीम के अनुभव गोलकीपर पीआर श्रीजेश ध्वजवाहक हैं। मनु ने पेरिस ओलंपिक में दो कांस्य पदक जीते थे और वह एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली आजाद भारत की पहली एथलीट बनी थीं। वहीं, पीआर श्रीजेश पेरिस खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम का अहम हिस्सा थे। श्रीजेश ने ओलंपिक के बाद अंतरराष्ट्रीय हॉकी से संन्यास की घोषणा कर दी थी। श्रीजेश टोक्यो ओलंपिक में भी शामिल थे और उस वक्त भी टीम ने कांस्य पदक अपने नाम किया था।

अडानी की कंपनी और हिंडनबर्ग

श्रीकंचनपथ

हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट पर क्यों भरोसा किया जाना चाहिए? वह तो विदेशी कंपनी है। ऊपर से विपक्षी नेताओं के विदेशों से संबंध हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च ने देश के प्रतिभूति बाजार की शीर्ष संस्था को बदनाम करने की कोशिश की है। ऐसी संस्थाओं से नफ़रत की जानी चाहिए। सेबी प्रतिभूति बाजार को विनियमित करके पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और निवेशकों के हितों की रक्षा करके भारतीय वित्तीय प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस सेबी के खिलाफउसने आरोप लगाए हैं वह पाले के उस तरफ है। इसका मतलब यह है कि बात-बात पर छापे मारने वाली सीबीआई, ईडी और ईओडब्लू खामख्वाह उसपर नहीं चढ़ दौड़ेगी। वैसे भी आरोपी ने अपनी सफाई दे दी है। उसपर शक करने की कोई वजह नहीं है। वैसे भी ईडी और ईओडब्लू केवल ऐसे लोगों को सालों साल जेल में डालकर रखने के लिए बदनाम है जिनके खिलाफवह सबूत इकट्ठा नहीं कर पाती। हिंडनबर्ग रिसर्च ने सेबी प्रमुख और उनके पति पर मनी लांड्रिंग के आरोप लगाए हैं। प्रिवेंशन ऑफमनी लांड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत केवल विपक्ष के नेता प्रताड़ित किये जा सकते हैं। सेबी चेयरमैन इसके दायरे से बाहर हैं। वैसे भी विदेशी ताकत भारत को अस्थिर करने की कोशिश कर रहे हैं। हम हरगिज ऐसे आरोपों को बर्दाश्त नहीं कर सकते। जिन पर आरोप लगाए गए हैं वो देश के महत्वपूर्ण लोग हैं। उनकी बातों और बयानों पर भरोसा किया जाना चाहिए। इस मामले में फ़रवरी 2023 में सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की गई थी। मार्च 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने सेबी को दो महीने के भीतर अडानी समूह की ओर से स्टॉक मूल्य हेरफेर के आरोपों और नियामक खुलासों में किसी भी चूक की जांच करने का निर्देश दिया। मई 2023 में विशेषज्ञ समिति ने अपनी रिपोर्ट सौंपी। मई 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने सेबी को अडानी समूह की ओर से स्टॉक मूल्य हेरफेर के आरोपों की अपनी जांच के संबंध में रिपोर्ट सौंपने के लिए 14 अगस्त, 2023 तक का समय दिया। नवंबर 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने स्टॉक मूल्य हेरफेर के आरोपों पर अडानी-हिंडनबर्ग मामले से संबंधित याचिकाओं पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। कुल मिलाकर अब तक देश के आगे आरोप और प्रत्यारोप के अलावा कुछ भी नहीं है। छोटी-छोटी बातों पर 'देश जानना चाहता है' का ढिंढोरा पीटने वाले भी न जाने क्यों खामोश हैं। वैसे भी देश जानकर क्या करेगा? ये मामले इतने पेचीदा होते हैं कि जानकारों को भी समझने में वक्त लगता है। इसमें सिर खपाने में कुछ भी मजेदार नहीं है। इसलिए फिलहाल देश को इसी बात पर खुश रहना चाहिए कि विदेशी ताकतों ने एक भारतीय संस्था और एक इंडियन निवेशक को बदनाम करने की कोशिश की है जिसका जमकर विरोध होना चाहिए। ऐसे ताकतों को उनके मंसूबों में कामयाब नहीं होने दिया जा सकता। यह राष्ट्रीय अस्मिता का सवाल है। पूरा देश एक-जुट दिखाई देना चाहिए।

संपादकीय

हमारे छह पदक

पेरिस ओलंपिक 2024 के मीठे-खट्टे अनुभवों को भारत एक सबक की तरह हमेशा याद रखेगा। छह पदकों (एक रजत, पांच कांस्य) के साथ ओलंपिक 2024 में भारत के सफर का समापन हो गया। यह याद आना स्वाभाविक है कि पिछले टोक्यो ओलंपिक में हमने सात पदकों (एक स्वर्ण, दो रजत, चार कांस्य) के साथ इससे बेहतर प्रदर्शन किया था। यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि अगर पहलवान विनेश फोगाट की अयोग्यता का मामला न होता, तो भारत अपने प्रदर्शन को दोहराने में सफल हो जाता।

यह भी याद किया जाएगा कि विनेश फोगाट के मामले ने देश में बड़ा राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया। ऐसा नहीं होना चाहिए था, लेकिन जिस देश में राजनीति और खेल संघों को अलग-अलग न किया जा सके, वहां ऐसे विवाद स्वाभाविक हैं। यह 100 ग्राम से उपजी सियासत भी सुबूत है कि हम खेलों व खिलाड़ियों के प्रति पूरी तरह पेशेवर या समर्पित नहीं हैं। विनेश प्रकरण के अनेक परत हैं, जिन पर हमें गौर करना होगा। फिर भी प्रशंसा करनी चाहिए कि हमने ओलंपिक की खेल अदालत में विनेश की शिकायत को पुरजोर ढंग से उठाया है और मुमकिन है कि 13 अगस्त को एक और रजत पदक हमारी झोली में आ जाए।

सबसे बड़ी खुशी राष्ट्रीय खेल हॉकी को लेकर है कि हमने लगातार दूसरी बार कांस्य पदक जीता है। इससे निस्संदेह भावी खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ेगा, हम लगातार अपने खेल को सुधारते और पदक जीतते चले जाएंगे। इस ओलंपिक को नीरज चोपड़ा के रजत पदक और उनके साथी पाकिस्तानी अरशद नदीम के स्वर्ण पदक के लिए भी याद किया जाएगा। नीरज और नदीम की मां के उद्गार भी याद आएंगे। लंबे समय बाद पाकिस्तान की झोली में एक पदक, वह भी स्वर्ण आया है और पाकिस्तानियों को चर्चा के लिए एक सकारात्मक विषय मिला है। नदीम वहां प्रेरणास्रोत बनें, तो इसमें दक्षिण एशिया का हित है। यह ओलंपिक निशानेबाज मनु भाकर के लिए भी याद किया जाएगा। उन्होंने एक कांस्य पदक व्यक्तिगत शूटिंग में और दूसरा सरबजोत के साथ मिश्रित टीम में जीता है। निशानेबाज स्वप्निल कुसाले और पहलवान अमन सहरावत ने भी कांस्य जीतकर भारत का नाम रोशन किया है। यह ओलंपिक हॉकी गोलकीपर पी आर श्रीजेश की शानदार विदाई के लिए भी याद किया जाएगा। ये खिलाड़ी अब प्रेरणा-स्रोत बनकर भारतीय खेल इतिहास में दर्ज हो गए हैं।

अब यहां से खेल प्रबंधकों-निर्णायकों के लिए काम शुरू हो जाता है। क्या सोचा गया था और क्या हुआ है? आगे क्या सुधार करना है? किससे क्या सीखना है? खेल निर्णायकों को युद्ध स्तर पर काम करना होगा, तभी उनकी सार्थकता है, वरना पदक तालिका तो अभी कहीं उत्साह से दिखाने लायक भी नहीं है। सबसे ज्यादा पदक अमेरिका ने जीते हैं, पर चीनी खिलाड़ियों ने रणनीति के तहत स्वर्ण पर निशाना साधा है। जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, नीदरलैंड, ग्रेट ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, इटली इत्यादि के पदक गिनने के बजाय हमारा जोर अपने प्रदर्शन को सुधारने पर होना चाहिए। हमें सोचना होगा कि हमारा ध्यान किधर ज्यादा है? मुक्केबाजी और भारोत्तोलन में क्यों हमारी अवनति हुई है? खैर, यह पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के सत्कार का समय है। हम जब खिलाड़ियों के साथ मजबूती से खड़े होने लगेंगे, तो खेलों में सुधार की प्रक्रिया तेज हो जाएगी। हॉकी के पुनरोत्थान और ओडिशा सरकार के सहयोग से भी सीखना चाहिए।

नजरिया

दुनिया में हुए युवा आंदोलनों को याद करने की जरूरत

गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन और बिहार के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के जब 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं, तब कई देशों में हुए एक और युवा आंदोलन को याद करना जरूरी है, जिसके घटनाक्रम अब भी हमारी स्मृतियों में ताजा हैं। चंद महीनों बाद उस आंदोलन के 15 साल पूरे हो जाएंगे, जिसे हम 'अरबी प्ररंग' के नाम से जानते हैं।

हरजिंदर, वरिष्ठ पत्रकार

ट्यूनीशिया से शुरू हुआ यह आंदोलन जब एक के बाद एक पश्चिम एशिया के तमाम देशों में फैलने लगा, तो पूरी दुनिया की खैर-खबर रखने वाले तकरीबन सभी आलिम-फाजिल दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर थे। लीबिया, मिस्र, यमन, सीरिया, बहरीन जैसे देशों में नौजवान सड़कों पर आ चुके थे। वे तानाशाही की तमाम पाबंदियां हटाने और मानवाधिकार देने की मांग कर रहे थे। यह हवा इतनी तेज थी कि मोरक्को, इराक, अल्जीरिया, लेबनान, जॉर्डन, कुवैत, ओमान, सूडान और यहां तक कि सऊदी अरब में भी इसके झोंके महसूस किए गए। आंदोलन का भूगोल भले ही सीमित रहा हो, लेकिन इसने दुनिया के तानाशाहों और लोकतांत्रिक ताकतों को यह संदेश दे दिया था कि इस नए दौर में पुराने तौर-तरीकों से नौजवान पीढ़ी को ज्यादा समय तक भरमाए नहीं रखा जा सकता।

नए दौर का जिक्र यहां इसलिए जरूरी है कि इंटरनेट, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के आगमन के बाद का यह पहला बड़ा आंदोलन था, जो एक साथ कई देशों में फैला। तकनीक ने देश की सीमाओं से परे लोगों को आपस में जुड़ने का मौका दे दिया था। इनसे लोगों को लामबंद किया गया, धरना स्थलों तक खींच लाया गया और जो नहीं पहुंच सके, वे लाइक, कमेंट और फॉरवर्ड से भागीदार बनते रहे। इस सबका असर भी दिखा। कई देशों के शासनाध्यक्षों को गद्दी छोड़नी पड़ी। कई राजाओं ने अपनी गद्दी तो नहीं छोड़ी, लेकिन उन्हें प्रधानमंत्रियों को बर्खास्त करना पड़ा। तमाम जगहों पर सरकारें भंग की गईं और नए सिरे से चुनाव कराए गए।

मगर इन सबके बाद क्या रक्तहीन क्रांति की बात करने वाले इन देशों के नौजवानों ने वह हासिल कर लिया, जिसके लिए वे सड़कों पर निकले थे? इसका जवाब पाने के लिए हमें अमेरिकी थिंक टैंक 'कौंसिल ऑन फॉरेन रिलेशन' के एक अध्ययन को देखना होगा। यह अध्ययन बताता है कि इन सबमें ट्यूनीशिया एकमात्र ऐसा देश है, जहां लोकतंत्र स्थापित हुआ। बाकी सभी देशों में तानाशाही जैसी थी, कम या ज्यादा वैसी ही बनी रही। अपवाद सिर्फ मिस्र और सीरिया को कह सकते हैं, जहां सत्ता पहले से ज्यादा सख्त हो गई। तमाम देशों में लोगों के अधिकार कम कर दिए गए और उनके जीवन-स्तर में भी कोई खास सुधार नहीं हुआ। यहां तक कि ट्यूनीशिया में भी, जहां लोकतंत्र काफी हद तक स्थापित हो चुका था। युवा आंदोलनों के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि वे बेरोजगारी की कुंठा से उपजते हैं। इलाज भी यही बताया जाता है कि नौजवानों को काम में लगाकर घर-गृहस्थी में उलझा दो, तो वे सड़कों पर नहीं निकलेंगे। यह धारणा कितनी सही है और कितनी नहीं, इस विस्तार में जाए बिना अगर हम 'अरब क्रांति' के दौरान आंदोलित देशों को देखें, तो आंदोलन के बाद भी वहां की सरकारों ने इस इलाज को अपनाने की या तो कोशिश नहीं की या फिर इसमें सफलता हासिल नहीं की। ज्यादातर देशों में बेरोजगारी दर कम या ज्यादा वैसी ही बनी रही, जैसी वह पहले थी।

हम अरब देशों की इस क्रांति को तब याद कर रहे हैं, जब हमारे पड़ोस बांग्लादेश में युवा उबाल का एक अन्य रूप हमने अभी देखा है। चंद हफ्तों के युवा आंदोलन ने 15 साल से जमी-जमाई उस सरकार को उखाड़ फेंका, जो आई तो लोकतंत्र के दरवाजे से थी, लेकिन पूरे देश को तानाशाही की गहरी गुफाओं में ले गई। इस आंदोलन का स्वागत किया जाना चाहिए, पर अरबी प्ररंग के सबक यहां हमें आशंकित करते हैं। डर है कि ये नौजवान जितना हासिल करने के लिए घर से निकले हैं, कहीं उससे ज्यादा वे खो न दें। इस डर का कारण भी है। सत्ता में बदलाव के बाद वहां जिस तरह से हिंसा हो रही है, सांप्रदायिक तत्वों को खेलने का मौका मिला है और अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है, वह भविष्य को लेकर कोई उम्मीद नहीं बनाता। क्या पश्चिम एशिया के नौजवानों की तरह ही बांग्लादेश के नौजवानों को भी एक अंधेरे के बदले दूसरा अंधेरा मिलेगा?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बदलती जरूरतों के हिसाब से प्रशिक्षित हों युवा

सुरेश सेठ

दुनिया तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। कामकाज के तरीके तेजी से डिजिटल और स्वचालित हो रहे हैं। रोबोटिक शक्ति इसका आधार बन रही है। कृत्रिम मेधा भी मुख्य सहयोगी के रूप में उभर रही है। यानी भारत में उत्पादन, निवेश और खेती-किसानी के तरीके भी बदलेंगे। विशेषज्ञों के अनुसार अगले दस सालों में कामकाज के घंटों और नौकरी करने के तौर-तरीकों में परिवर्तन आएगा। एआई और रोबोटिक्स के चलते स्थायी व्यवस्था की जगह गिग अर्थव्यवस्था सामने आएगी। इसमें जरूरत के अनुसार अस्थायी कर्मचारियों को काम पर रखने का चलन बढ़ेगा। इसके साथ ही, काम के घंटे बदलने के कारण पारंपरिक नौकरियों की व्यवस्था के अतिरिक्त कर्मचारी संविदा के आधार पर विभिन्न सेक्टरों-कंपनियों में एक साथ कई जिम्मेदारियां संभाल सकेंगे। इसका असर डिजिटल और इंटरनेट की दुनिया में अभी से दिखने लगा है। आईटी एक्सपर्ट वर्क फ्रॉम होम करते हुए एक साथ कई कंपनियों का काम संभाल रहे हैं। पिछले दिनों एक प्रस्ताव सामने आया था कि काम के घंटे 10 से 14 कर दिए जाएं, क्योंकि आईटी क्रांति का सामना इसी तरह से किया जा सकेगा। बहरहाल, कामकाजी दुनिया की हकीकत बदल रही है।

हाल के बजट में वित्तमंत्री ने भी जिन पांच क्षेत्रों में नौकरी की व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित किया है, उसमें कृत्रिम मेधा और रोबोट्स की दुनिया के प्रयोग को नकारा नहीं है। भारत, जिसकी आबादी इस समय दुनिया में सबसे अधिक है, क्या वह कृत्रिम मेधा या रोबोट का उपयोग उसी तरह कर सकता है जैसे शक्ति-संपन्न पश्चिमी देश करते हैं, जहां आबादी की कमी है। बजट सत्र में वित्तमंत्री ने नई नौकरियों के लिए दो लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसके द्वारा अगले पांच साल में 4.1 करोड़ नौजवानों को विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे रोजगार की दुनिया में खुद को अनुकूलित कर सकें।

देश में आज भी आधी आबादी से कम खेतीबाड़ी में लगी हुई है। प्रश्न है कि वहां से सकल घरेलू आय में केवल 15 प्रतिशत का योगदान ही क्यों मिल रहा है? आंकड़े बता रहे हैं कि कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, ऐसे बेरोजगार भी हैं जो पारंपरिक तरीके से अपनी पैतृक खेतीबाड़ी के धंधे में लगे रहते हैं, लेकिन देश की निवल आय में उनका कोई योगदान नहीं है। इस अनुपयोगी युवा शक्ति का इस्तेमाल किसी ऐसे वैकल्पिक धंधे में होना चाहिए जो उन्हें ग्रामीण स्तर पर ही वहीं काम उपलब्ध करवा दे। लघु और कुटीर उद्योगों का विकास और फसलों को पूर्ण रूप से तैयार करके सीधे मंडी में बेचना भी एक समाधान हो सकता है। बजटीय घोषणाओं में अगले वर्ष अखिल भारतीय सहकारी अभियान चलाने का वादा है। इसके अंतर्गत इन सभी लोगों को काम मिलेगा। लघु-कुटीर उद्योगों की बातें तो होती हैं लेकिन लाल डोरा क्षेत्र में भी ग्रामीण युवा शक्ति के स्थान पर शहरी निवेशक ही प्रवेश करता नजर आता है।

निस्संदेह, जब निजी क्षेत्र का विकास होगा और नये कारखाने खुलेंगे या फसलों पर आधारित छोटे उद्योग बढ़ेंगे, तो लोगों को स्वाभाविक रूप से रोजगार मिल जाएगा। सरकार द्वारा नौकरियां देने की क्षमता बहुत कम है। बेरोजगारों को सरकारी नौकरी देने का प्रतिशत 30 से अधिक नहीं रहा। आर्थिक प्रोत्साहन और नए निवेश के बावजूद देश अधिक से अधिक हर साल 70 लाख नौकरियां ही प्रदान कर पाएगा, जबकि देश के युवाओं को हर वर्ष कम से कम एक करोड़ नौकरियों की आवश्यकता पड़ेगी। क्या निजी क्षेत्र, सरकार के सभी प्रोत्साहनों, सब्सिडियों, मुद्रा योजनाओं और लोन क्षमता बढ़ाने के बावजूद इस कसौटी पर पूरा उतर सकेगा? बेशक, इस बार के बजट में मुद्रा योजना के तहत कर्ज की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख प्रति इकाई कर दी गई है। नया प्रशिक्षण प्राप्त करने की इंटर्नशिप पर सबसिडी भी दी जा रही है। लेकिन क्या इतना काफी है?

देश में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों को अभी भी उचित महत्व नहीं दिया जा रहा। शिक्षा बजट में केवल सवा लाख करोड़ रुपये और सेहत पर केवल 89 हजार करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। यह युवा शक्ति को स्वस्थ-शिक्षित नागरिक बनाने हेतु काफी नहीं है।

शिक्षाविदों के अनुसार, पुरानी शिक्षा पद्धति से निकले हुए 75 प्रतिशत ग्रेजुएट्स नई डिजिटल व्यवस्था में नौकरी के योग्य नहीं हैं। इसलिए, युवा शक्ति को अपनी डिग्री से कहीं नीचे के काम करने के लिए समझौता करना पड़ता है। देश में काम देने में असंगठित क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान रहा है, लेकिन डिजिटलीकरण के साथ असंगठित क्षेत्र भी बिखरता नजर आ रहा है। जरूरी है कि बेरोजगारों के संघर्ष को बेहतर ढंग से समझा जाए और बदलते समय की मांगों के अनुसार युवा शक्ति को प्रशिक्षित करके उसे सही दिशा में कार्यशील बनाया जाए।

(ये लेखक के विचार हैं)

दिल्ली में उभरते विवाद लोकतंत्र के लिए चुनौती

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार की याचिका को खारिज कर दिया है जिसमें उपराज्यपाल को एमसीडी में दस एल्डरमैन नामित करने के अधिकार को चुनौती दी गई थी। अदालत ने कहा वह (उपराज्यपाल) मंत्रीपरिषद की सलाह मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। उपराज्यपाल कार्यालय और दिल्ली सरकार के दरम्यान तनावपूर्ण संबंधों पर असर डालने वाले फैसले में पीठ ने कहा कि 1993 में संशोधित दिल्ली नगर निगम कानून उपराज्यपाल को निगम की विशेष जानकारी रखने वालों को नामित करने का विशेष अधिकार देता है।

शक्ति संदर्भ में यह स्पष्ट है कि उपराज्यपाल को कानून के अनुसार काम करना होता है न कि मंत्रीपरिषद की सलाह के अनुसार। यह राज्यपाल का वैधानिक कर्त्तव्य है, न कि राज्य की कार्यकारी शक्ति। एमसीडी में ढाई सौ निर्वाचित और दस नामित सदस्य हैं। दिसम्बर, 2022 में नगर निगम चुनाव में आप ने 134 वार्ड जीत कर भाजपा के पंद्रह साल के शासन को खत्म कर दिया था। आप के वरिष्ठ नेता सांसद संजय सिंह ने इस फैसले पर नाराजगी व्यक्त की। सिंह ने कहा कि यह चुनी गई सरकार पर एलजी के अधिकारों को तवज्जो देने वाला फैसला है।

उन्होंने इसे दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय कहा। दिल्ली के मुख्यमंत्री समेत कई वरिष्ठ नेता विभिन्न मामलों में इस वक्त जेल में हैं जिससे सरकार के काम-काज में पहले ही खासी दिक्कत आ रही है। दूसरे जब से दिल्ली की सत्ता आम आदमी पार्टी के हाथ आई है, तब से उसकी लगातार केंद्र और उपराज्यपाल से ठनी रहती है। दोनों कई बार पहले भी अदालत की शरण जा चुके हैं। यह कहना गलत नहीं है कि जनता द्वारा चुनी गई सरकार को काम-काज की पूरी छूट होनी चाहिए। इसमें नियमों/कानून की अवहेलना कतई बर्दाश्त नहीं की जा सकती। चूंकि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं प्राप्त है, इसलिए लगातार विवाद उभरते रहते हैं जो लोकतंत्र के लिए चुनौती हैं।

अधिकार क्षेत्र या विकास कार्यों को लेकर उठने वाले विवादों के निपटारे के लिए पारदर्शी नियम बनाए जाने की जरूरत है। सरकार को भी अपने फैसलों में एलजी के अधिकारों का अतिक्रमण करने से बचना सीखना होगा। दरअसल, जब से दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार आई है, तभी से केंद्र और उसके बीच जब-तब मसले और मामले और विवाद उभरते रहे हैं। इसलिए जरूरी है कि दोनों तरफ परस्पर विवेकपूर्ण रवैया अपनाया जाए।

(राष्ट्रीय न्यूज एजेंसी)

बांग्लादेश में अमेरिका के रणनीतिक हित स्पष्ट

डॉ. दिलीप चौबे

बांग्लादेश के घटनाक्रम से भारत को राजनीतिक और रणनीतिक रूप से बहुत धक्का लगा है। इस नुकसान की निकट भविष्य में भरपाई हो पाएगी ऐसी संभावना नहीं लगती। भारत के लिए यह भी अफसोस की बात है कि जिस देश के निर्माण में उसने निर्णायक भूमिका निभाई थी वह फिर गुलामी की सुरंग में प्रवेश कर रहा है। यह विडम्बना है कि बांग्लादेश के नये हुक्मरान इसे दूसरी आजादी की संज्ञा दे रहे हैं। बांग्लादेश में राष्ट्रपिता शेख मुजिबुर रहमान की प्रतिमाओं को तोड़े जाने का दृश्य भारत के लोगों के लिए भी हृदयविदारक है। यह विचारणीय है कि बांग्लादेश का युवा वर्ग इतना गुमराह कैसे हो गया कि वह 1971 की आजादी की विरासत भी भूल गया। कहने के लिए युवा वर्ग के आंदोलन का नेतृत्व स्वतंत्रता प्रेमी और प्रगतिशील छात्र नेता कर रहे थे। वे शेख हसीना के कथित निरंकुश शासन से छुटकारा पाने और वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना के लिए सड़कों पर उतरे थे। लेकिन हिन्दुओं पर लगातार हो रहे हमलों से इस आंदोलन का भयावह चेहरा उजागर हुआ है।

बांग्लादेश की चर्चित लेखिका और भारत में निर्वासन का जीवन जी रही तसलीमा नसरीन ने घटनाक्रम का विश्लेषण किया है। तसलीमा को शेख हसीना के शासनकाल में देश छोड़ने पर मजबूर किया गया था। तस्लीमा शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद दिल्ली आने को नियती का न्याय मान रही हैं। लेकिन इस व्यक्तिगत नाराजगी से अलग होकर वह लोकतंत्र और मजहबी विचारधारा के अंतर्विरोधों का भी जिक्र करती हैं। उनके अनुसार 'मुस्लिम समाज जब अल्पसंख्यक होता है तो वह लोकतंत्र चाहता है, लेकिन बहुसंख्यक होता है तो वह इस्लामी राज्य की मांग करता है।' शेख हसीना ने अपने शासनकाल में इसी अंतविरेध को दूर करने की कोशिश की थी। वह एक लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष रूप में देश को विकास के रास्ते पर ले जा रही थीं। इतना ही नहीं विदेश मामलों में वह स्वतंत्र विदेश नीति को अनुसरण करने की कोशिश कर रही थीं। अपनी इन नीतियों के समर्थन में घरेलू स्तर पर वह जनसमर्थन को संगठित करने में कामयब नहीं हो सकीं। बांग्लादेश में विपक्षी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) और कट्टरपंथी जमात-ए-इस्लामी का गठजोड़ कायम रहा। इन्हीं हालात में अमेरिका और ब्रिटेन समेत पश्चिमी देशों ने बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन की मुहिम को हवा दी। मुखौटे के रूप में छात्रों और नोबल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस को सामने लाया गया। बांग्लादेश में अमेरिका के रणनीतिक हित स्पष्ट हैं। वह हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में चीन की नाकाबंदी करना चाहता है। उसने इसी क्रम में भारत को शामिल करने के लिए क्वाड की स्थापना की थी, लेकिन हाल के वर्षो में स्पष्ट हो गया कि भारत दादागिरी के इस खेल में एक पक्ष बनने के लिए तैयार नहीं है। नये हालात में अमेरिका ने वैकल्पिक उपाय के रूप में ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के साथ सैन्य गुट 'ऑक्स' की स्थापना की। साथ ही जापान, द. कोरिया और फिलिपींस के साथ गठजोड़ को मजबूत बनाया। केवल बंगाल की खाड़ी का विस्तृत इलाका खाली पड़ा था। इस क्षेत्र में अपनी रणनीतिक दखल को बढ़ाने के लिए अमेरिका ने बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन में भूमिका निभाई।

सवाल यह है कि शेख हसीना और उनकी पार्टी अवामी लीग का क्या भविष्य है। फिलहाल अमेरिका की कोशिश यह होगी कि बांग्लादेश में लोकतंत्र का स्वांग रचाया जाए। साथ ही शेख हसीना की बांग्लादेश वापसी को हर हाल में रोका जाए। अवामी लीग में वैकल्पिक नेतृत्व कायम किया जाए जो अमेरिकी हितों का ध्यान रखे। भारत ने 1971 में अमेरिका के 7वें नौसैनिक बेड़े को धता बताते हुए बांग्लादेश को आजाद कराया था। आधी सदी बाद क्या भारत फिर ऐसी भूमिका निभाएगा? भारत अपने बलबूते शायद ऐसा करने की स्थिति में नहीं है। उसे इस चुनौती का सामना करने के लिए रूस, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों का सहयोग हासिल करना होगा। केवल ऐसा व्यापक गठजोड़ ही बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर को सुरक्षित रख सकता है। केवल इससे पूर्वोत्तर में शांति, स्थिरता तथा भारत के रणनीतिक हितों की सुरक्षा भी संभव है।

(ये लेखक के विचार हैं)

यह शक्ति प्रदर्शन नहीं तो क्या है....

सुनील दास

कहा जाता है कि शक्ति है तो उसका सदुपयोग किया जाना चाहिए। बहुत ही कम लोग होते हैं जो ऐसा कर पाते हैं, ज्यादातर लोग तो शक्ति पाते ही, शक्ति आते ही उसका दुरुपयोग करते हैं। वह बार-बार बताने की कोशिश करते रहते हैं कि देखो, अब हमारे पास ज्यादा ताकत है। हम भी बहुत कुछ कर सकते हैं। अब तो हम भी जो चाहे वह कर सकते हैं। देश में कांग्रेस,सपा सहित विपक्ष के दल यही कर रहे हैं।लोकसभा चुनाव में पिछली बार से ज्यादा सीटें जनता ने कांग्रेस, सपा सहित विपक्ष को इसलिए दी है वह मजबूत विपक्ष की भूमिका निबाहे। संसद मे जनहित के मुद्दे उठाए और सरकार को सवालों के कठघरे में खड़ा करे। कांग्रेस,सपा सहित विपक्ष से जनता ने जो आशा की थी, वह आशा कांग्रेस,सपा व विपक्ष पूरी तो नहीं करते दिख रहे हैं।

वह तो चुनाव जीतने के दूसरे दिन से ही ज्यादा सीटें पाने के घमंड मे फूले हुए कहने लगे थे कि जीत तो हमारी हुई है,जनता ने तो हमें ज्यादा सीटें दी है और भाजपा की सीटें कम कर दी हैं। सरकार एनडीए की बन गई तो भी उनका घमंड कम नहीं हुआ। अब वह कहने लगे कि यह तो कमजोर सरकार है, यह तो अपना स्पीकर तक नहीं बना सकती, एनडीए ने अपना स्पीकर बना लिया, डिप्टी का स्पीकर का पद विपक्ष को नहीं दिया और बता दिया कि मजबूत कौन है, एक नहीं कई बार मुंह की खाने के बाद भी विपक्ष बार बार यह उम्मीद करता रहा कि अब तो एनडीए की सरकार गिर जाएगी, मंत्री पंद को लेकर तो एनडीए में ऐसा विवाद होगा कि सरकार बचने वाले नहीं है।

ऐसा भी नहीं हुआ। एनडीए ने आराम से सरकार बना ली, स्पीकर अपना बनवा लिया, मंत्री भी बना लिए। बजट आयो तो विपक्ष उम्मीद करने लगा कि बजट में विशेष पैकेज के नाम पर तो एनडीए सरकार जरूर गिर जाएगी। नीतीश कुमार व चद्र बाबू नायडू दोनों की सरकारों को बजट मे? जो कुछ दिया गया, उसपर दोनों ने संतोष जताया तो निराश विपक्ष ने अब इस बात के लिए सरकार की आलोचना की कि बिहार व आंध्र प्रदेश को ज्यादा दे दिया और दूसरे राज्यों की उपेक्षा की गई।यह दांव भी फेल हो गया क्योंकि बजट सभी राज्यों को जितना दिया जाना धा,उतना दिया गया। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया गया। वित्तमंत्री ने संसद में विपक्ष के झूठ का पर्दाफाश आंकड़ों के जरिए कर दिया।

पिछले सत्र की तरह राहुल गांधी ने बजट सत्र में बजट पर कम जो बोलना था,वही बोला, इस दौरान स्पीकर ने उनको फिर बताया कि आप जिस पद पर है, उस पद पर रहते हुए आपको जो भी बोलना है, नियमों के अनुसार बोलना है। यह न तो राहुल गांधी को पसंद आया और नही विपक्ष को पसंद आया, उनकी संख्या बढ़ गई है, इसलिए वह चाहते हैं कि वह संसद में जो बालना चाहते हैं, बोलने दिया जाए। न लोकसभा में ऐसा करने दिया गया और नही राज्य सभा में ऐसा करने दिया गया। इससे विपक्ष के लिए स्पीकर व राज्यसभा के सभापति पर यह आरोप लगाना तो सबसे आसान हो जाता है कि स्पीकर व सभापति उनको बोलने नहीं देते हैं।

विपक्ष के नेताओं के आचरण पर गौर किया जाए तो लोकसभा व राज्यसभा दोनों जगह वह यह बताने, जताने की पूरी कोशिश करता रहा है कि उसका ताकत अब बढ़ गई है, वह भी बहुत कुछ कह सकता है और कर सकता है। स्पीकर व सभापति के खिलाफ तो वह तो बहुत कुछ कहता रहा है, विपक्ष की तरफ से तो स्पीकर के लिए यह तक कहा गया कि पीएम का ज्यादा सम्मान करते हैं, मेरा कम सम्मान करते हैं। इसका मतलब तो यह भी निकाला जा सकता है, अब विपक्ष की ताकत बढ़ गई है,इसलिए स्पीकर को विपक्ष के नेता का सम्मान ज्यादा करना चाहिए।

राज्यसभा मे संभवत: आज तक किसी सद्स्य ने यह नहीं कहा होगा कि सभापति जी आपका टोन ठीक नहीं है, यह सवीकार करने योग्य नहीं है। बात कहने तक सीमित रहती तो भी बात समझी जा सकती थी कि सदस्य ने तैश में आकर,गुस्से में ऐसा कह दिया होगा। टोन को लेकर तो विपक्ष के 87 सदस्यो ने सीधे उपराष्ट्रपति को हटाने के प्रस्ताव पर दस्तखत कर दिए।विपक्ष के राज्यसभा व लोकसभा में बहुमत नहीं है इसलिए उसके लिए प्रस्ताव लाना तो आसान है लेकिन उसे लोकसभा व राज्यसभा में पारित करवाना आसान नहीं है।

विपक्ष के लिए बहुमत जुटाना इतना आसान होता तो वह अब तक सरकार न बना लेती। इसलिए उपराष्ट्रपति के खिलाफ प्रस्ताव लाना और कुछ नहीं विपक्ष का शक्तिप्रदर्शन ही है कि देखों यह है विपक्ष की ताकत, अब उपराष्ट्रपति के खिलाफ वह प्रस्ताव ला सकता है। विपक्ष तो ताकतवर तब माना जाता जब लाए गए प्स्ताव को पारित भी करा पाता। वह हमेशा की तरह बड़ी बड़ी बातें करके खुद को हंसी का पात्र बनाता रहा है,उपराष्ट्रपति के खिलाफ प्रस्ताव लाकर भी वह फिर एक बूार हंसी का पात्र ही बनेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

Sargam
Musicals
Deals in All Kinds of Musical Instrument Sales & Repair
DURG:- Near Tarun Adlabs Station Road, Durg (C.G.) Durg, Ph. 2330588, 9826660688
RAIPUR:- Near Manju Mamta Reaustaurant, M.G. Road Raipur. Ph. 4013288, 9303876196

गंजेपन से मुक्ति मात्र 1 घंटे में
COMPLETE FAMILY SALON
हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी
पहले बाद में
JITU'Z
CUT N SHINE
93009-11331
रंगोली बेंगल्स के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रानिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

रमन (प्रा.) आई.टी.आई.
Recognised by: NCVT & DGT NEW DELHI, GOVT. OF INDIA
COPA
कोपा
STENOGRAPHER (Hindi)
स्टेनोग्राफर (हिन्दी)
योग्यता 10वीं उत्तीर्ण
(एक वर्षीय पाठ्यक्रम) - प्रवेश प्रारंभ
प्रवेश लेने पर फीस में विशेष छूट
एवं फीस मासिक किस्तों में
शासन द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति योजना
Raman I.T.I. : बाबा दीप सिंह नगर (वैशालीनगर), भिलाई, जिला-दुर्ग, छ.ग.
Call : 0788-4033571, 7389471941, 0788-4903573 4903572, 7773027492

श्रीकंचनपथ
भिलाई–दुर्ग

ITR फाईल बनवाएं मात्र 499/-
• TDS रिफंड • GST रजिस्ट्रेशन • इनकम TAX फाइल
• प्रोजेक्ट रिपोर्ट • MSME रजिस्ट्रेशन • GST रिटर्न फाइल
• CMA DATE • फूड लाइसेंस • BALANCE SHEET
हमारे TAX EXPERT आपकी मदद हेतु तैयार हैं
संपर्क : शेखर गुप्ता, मो. 93007-55544, 8878655544
D-6 सेक्टर-2, गुरुद्वारा के सामने देवेन्द्र नगर रायपुर

खास खबर

हर घर तिरंगा अभियान : छावनी पुलिस ने घर पर तिरंगा लगाने किया लोगों को प्रेरित

भिलाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर देशभर में हर घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में प्रशासनिक स्तर पर अभियान चलाकर लोगों को जागरुक किया जा रहा है। इसी कड़ी में दुर्ग जिले के छावनी थाना क्षेत्र में भी पुलिस द्वारा लोगों को अपने घरों में तिरंगा लगाने जागरुक किया जा रहा है। इसके लिए स्वयं थाना प्रभारी अपनी टीम के साथ क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं लोगों को अपने घरों में तिरंगा लगाने प्रेरित कर रहे हैं। छावनी थाना प्रभारी चेतन चंद्राकर ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस के पूर्व 9 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है। दुर्ग जिले में एसपी जितेन्द्र शुक्ला के निर्देश पर सभी थाना क्षेत्रों में यह अभियान चलाया जा रहा है। छावनी थाना क्षेत्र में भी लोगों को जागरुक किया गया। लोगों से मिलकर पुलिस की टीम ने अपने घरों में तिरंगा लगाने की अपील की है। लोगों ने भी पुलिस के प्रयास की सराहना की और इस अभियान में शामिल हुए।

रैली निकालकर हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत सफल बनाने जागरूकता अभियान चलाया

दुर्ग। भारत सरकार एवं राज्य शासन के आदेश और कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी के निर्देश एवं आयुक्त लोकेश चन्द्राकर के मार्ग दर्शन में हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन की टीम एवं निगम के स्वच्छता दीदी द्वारा शहर के विभिन्न वार्डों में तिरंगा रैली निकाल कर वार्डवासियों को प्रोत्साहित करने स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किया रैली का आयोजन किया गया।स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली और मुक्तेश कान्हा के नेतृत्व में हर घर तिरंगा कार्यक्रम हेतु सामुदायिक संगठक निशा वर्मा द्वारा वार्ड क्रमांक 35 की स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा तिरंगा रैली निकाली गई।श्रीमती अनु कसार (सामुदायिक संगठक) द्वारा वार्ड क्रमांक 15 और 17 में समूह की महिलाओं के माध्यम से रैली का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सुरेखा खुटेल द्वारा वार्ड क्रमांक 31 और 33 में , संतोष कसार द्वारा वार्ड क्रमांक 4 में अंजूलता देशमुख द्वारा वार्ड क्रमांक 53 तथा 54 में, लक्ष्मी ठाकुर द्वारा वार्ड क्रमांक 28 सुनंदा फुलझेले द्वारा वार्ड क्रमांक 47 में, वार्ड क्रमांक 59,60 में बिंदेश्वरी देशमुख द्वारा तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। तिरंगा रैली कार्यक्रम में स्व सहायता समूह की महिलाओं में उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया गया। शहर के विभिन्न मार्गो में हाथों में तिरंगा लेकर महिलाओं ने अलग-अलग वार्डो में हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने कार्य किया। सामुदायिक संगठकों द्वारा समूह की महिलाओं के माध्यम से निरंतर रैली किया जा रहा है। नगर पालिक निगम के विभिन्न वार्डों में महिला समूह एवं स्वच्छता दीदी द्वारा जा जाकर हर घर तिरंगा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।बात दे कि हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत समूहों में कुल 22 रैली निकाली गई।

हजारों भक्तों के साथ कांवड़ में शिवनाथ का जल लेकर निकले विधायक देवेंद्र, देव बलौदा में चढ़ाया जल

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। भिलाई और पूरे छत्तीसगढ़ की जनता, किसान,मजदूर,आम नागरिकों के हित और विकास के साथ ही सभी के सुख–शांति खुशहाली और समृद्धि की कामना लेकर सोमवार को भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव ने भव्य कावड़ पद यात्रा की शुरूआत की। हजारों भक्तों के साथ जय–जय महाकाल,हर हर महादेव के जयकारे के साथ कांवड़ यात्रा निकाली गई है।

पुष्प वर्षा से जगह-जगह हो रहा कांवड़ यात्रियों का भव्य स्वागत

सुबह करीब 5:30 बजे विधायक यादव शिवनाथ नदी के तट पर पहुंचे. पवित्र शिवनाथ नदी दुर्ग में स्नान किये । शिवनाथ तट पर स्थित शिवालय में भगवान शंकर की आराधना की। शिवलिंग में दूध और जल से महाअभिषेक किया गया। इसके बाद संकल्प लेकर देवबलौदा स्थित भोलेबाबा की प्राचीन मंदिर में जल चढ़ाने के लिए भक्तों के साथ पैदल कांवड़ में जल लेकर निकले। शाम को देव बलौदा मंदिर पहुंचकर प्राचीन शिवमंदिर में भगवान शिव को जल चढ़ाया।

इस बार 1 हजार से अधिक महिलाएं पुरुष व युवा साथी भी कांवड़ यात्रा में शामिल हुए। नंगे पैर भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव हजारों भक्तों के साथ अपने कांवड़ में शिवनाथ का जल लेकर यात्रा की। कांवड़ यात्रा का पूरे शहर भर में जगह-जगह पर हर चौक में भव्य स्वागत किया गया। शिवनाथ नदी के निकलने के बाद गंजपारा चौक में सैकड़ों भक्तों ने कांवड़यात्रियों पर पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया। फ्रूट-जूस आदि वितरण किए। डीजे की धुन में हर हर महादेव,मेरा भोला है भंडारी जैसे भक्तिगीत में भक्त झूमते नाचते यात्रा कर रहे। इसके बाद सेक्टर-9 चौक, सेक्टर पांच चौक, सेक्टर-1 चौक सहित अन्य चौक चौराहों पर कांवड़ियों का स्वागत किया गया। प्रसादी के रूप में खीर-खिचड़ी का भी वितरण किया गया।

दुर्ग महापौर और पूर्व विधायक अरुण वोरा हुए शामिल : यात्रा सुबह दूर के शिवनाथ नदी से निकली उसके पश्चात अरुण वोरा पूर्व विधायक दुर्गा के द्वारा रास्ते में यात्रा का स्वागत किया गया तत्पश्चात दुर्ग महापौर धीरज बागलिवार के द्वारा स्वागत किया गया और वह दुर्ग से सेक्टर 9 तक विधायक देवेंद्र यादव के साथ चले।

विधायक देवेन्द्र यादव की कांवड़ यात्रा में दूर दूर तक भगवा वस्त्रों में कांवड लेकर भक्त चलते रहे। रास्ते भर हर-हर महादेव के जयकारे गूंज रहे थे।

सुव्यवस्थित योजना बनाकर काम करें, तो छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य बन सकता है : विजय बघेल

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। अमृतकाल छत्तीसगढ़ विजन @2047 अंतर्गत संभाग स्तरीय संवाद कार्यक्रम रविवार को बीआईटी कॉलेज दुर्ग के ऑडिटोरियम में सफ्ल आयोजन हुआ। जिला प्रशासन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सांसद विजय बघेल, विधायक ललित चंद्राकर, गजेंद्र यादव कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान राज्य नीति आयोग टीम द्वारा अमृतकाल छत्तीसगढ़ विजन @2047 संबंधी प्रस्तुतिकरण किया गया।

सांसद विजय बघेल ने संभाग स्तरीय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक राज्य विकसित नही होगा तब तक राष्ट्र विकसित नही होगा। छत्तीसगढ़ असीम संभावनाओं का प्रदेश है। देश के किसी और राज्य में इतने संसाधन और क्षमता नहीं है। यदि सुव्यवस्थित योजना बनाकर काम करें, तो छत्तीसगढ़ को देश का पहला राज्य बन सकता है। विजन-डॉक्यूमेंट तैयार करने के उद्देश्य से सभी नागरिक पोर्टल के माध्यम से अपने सुझाव दे सकते हैं।

इस मौके पर राज्य नीति आयोग के सदस्य सचिव के सुब्रमण्यम ने कहा कि राज्य नीति आयोग द्वारा 'अमृत काल: छत्तीसगढ़ विजन @2047 दस्तावेज तैयार किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य राज्य के सभी क्षेत्रों का तीव्र विकास सुनिश्चित करना है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी @2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना है, जिसमें सामाजिक

न्याय का होना बहुत जरूरी है। जनता की भागीदारी हर स्तर पर होनी चाहिए। हमें समावेशी विकास के साथ आगे बढ़ना होगा। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना को साकार करने मे छत्तीसगढ़ राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। छत्तीसगढ़ राज्य मे भी 2047 तक सभी सेक्टर के त्वरित विकास को सुनिश्चित करने के लिए राज्य नीति आयोग छत्तीसगढ़ द्वारा अमृतकाल: छत्तीसगढ़ विज़न @2047'' डॉक्यूमेंट तैयार करने का कार्य सम्पादित किया जा रहा है। सर्व समावेशी विजन-डॉक्यूमेंट तैयार करने के उद्देश्य से सभी नागरिकों से पोर्टल के माध्यम से सुझाव आमंत्रित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा सबसे अधिक सुझाव हमें दुर्ग जिले से पोर्टल के माध्यम से प्राप्त हुआ है। इसके लिए उन्होंने दुर्ग जिलेवासियों को बधाई दी। 15 अगस्त 2024 तक इस पोर्टल के माध्यम से प्रेषित करने एवं 2047 तक छत्तीसगढ़ राज्य के समावेशी विकास को सुनिश्चित करने के लिए तथा विभिन्न सेक्टरों मे चहुमुखी विकास हेतु अपना सक्रिय योगदान देने को कहा।

राज्य नीति आयोग के संयुक्त संचालक डॉ. नीतू गौरड़िया ने कहा कि अमृतकाल: छत्तीसगढ़ विज़नञ्च2047 का उद्देश्य राज्य के विकास में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है, ताकि उनके सुझावों से छत्तीसगढ़ को एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर किया जा सके। दुर्ग शहर विधायक गजेन्द्र यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री की सोच लक्ष्य निर्धारित कर भारत को विकासशील देश से विकसित राष्ट्र बनाने की है,जिसमें युवा, महिला, किसान और गरीब समाज के हर व्यक्ति को समाहित किया गया है। सभी वर्गों के कल्याण के लिए केन्द्रीय बजट में विशेष प्रावधान किए गए हैं। इतिहास में पहली बार ''अमृत काल: छत्तीसगढ़ विजन @2047'' विज़न डॉक्यूमेंट तैयार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने गरीबों के लिए शौचालय एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवासों का निर्माण कराया, इससे गरीबों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। लोगों को रोजगार प्राप्त हुए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को पूरे प्रदेश में लागू कर दिया गया है।

इससे हमारे विद्यार्थियों को न केवल अपनी रूचि के अनुसार विषय चुनने का अवसर मिलेगा बल्कि वे अपनी दक्षता के अनुसार अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकेंगे अथवा स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नवाचार को जोड़ा गया, जिसके तहत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके, नवाचार को बढ़ावा देकर और समग्र विकास को बढ़ावा देकर शिक्षा प्रणाली को बदलना है।

दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि प्रधानमंत्री प्रदेश को विकसित भारत बनाने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन, वन संपदा और मानव संसाधन है। छत्तीसगढ़ विजन ञ्च2047 के लिए सभी संभागों में युवा, महिला, कृषक और प्रबुद्धजनों के साथ जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन कर उनके विचारों को शामिल किया जा रहा है।

साथ ही मोर सपना मोर विकसित छत्तीसगढ़ पोर्टल के माध्यम से लोगों के सुझाव आमंत्रित किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री की सोच के अनुरूप मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में 'छत्तीसगढ़ विजन @2047' डॉक्युमेंट तैयार किया जा रहा है।

तिरंगा के सम्मान में रैली आयुक्त ने दिखाई झंडी

श्रीकंचनपथ न्यूज

रिसाली। देश व्यापी अभियान तिरंगा रैली नगर पालिक निगम रिसाली क्षेत्र में रविवार को निकली गई। रैली में निगम के मेयर इन काउंसिल के सदस्य,पार्षद, अधिकारी, कर्मचारी और जनप्रतिनिधि समेत निगम के ब्रांड एंबेसडर शामिल हुए। रैली को हरी झंडी निगम आयुक्त मोनिका वर्मा ने दिखाई।

स्वतंत्रता दिवस के पूर्व देश के सम्मान में कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है। जिला स्तर पर तिरंगा रैली का आयोजन निगम क्षेत्र में किया गया। इस अवसर पर रैली को हरी झंडी दिखाने से पूर्व आयुक्त मोनिका वर्मा ने कहा कि रैली राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान में है।

देश के नागरिक होने के नाते हमे राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने अपील की है कि 15 अगस्त को घरों में तिरंगा लगाए और दुसरो को प्रेरित भी करे। उन्होंने पैदल चलकर रैली को नगर भ्रमण के लिए मुख्य कार्यालय से रवाना किया। इस अवसर पर एम आई सी अनूप डे, पार्षद गजेंद्री कोठारी, ममता सिन्हा, रमा साहू, विधि यादव, शीला नारखेड़े, ब्रांड एंबेसडर रजनी रजक, विधायक प्रतिनिधि के रूप में शैलेंद्र शेंडे,राजू जघेल, दशरथ साहू, बी एस एफके जवान, निगम के अधिकारी कर्मचारी शामिल हुए।

रैली में सैकड़ों बाइक

रैली में 100 से अधिक बाइक थी। रैली निगम मुख्य कार्यालय से होते हुए, कल्याणी मंदिर, रिसाली बस्ती, शिवाजी चौक, कृष्णा टाकीज रोड, जोहार चौक, डी पी एस चौक, पोस्ट आफ्सि रिसाली मार्ग, बी एस पी मार्केट, दशहरा मैदान, मरोदा सेक्टर, मैत्री गार्डन चौक, बी आर पी गेट होते वापिस निगम कार्यालय पहुंची।

रत्नत्रयी वर्षावास के अंतर्गत मनाया गया परमात्मा नेमिनाथ भगवान का पंच कल्याणक महोत्सव

श्रीकंचनपथ न्यूज

दुर्ग। नगर में रत्नत्रयी वर्षावास के अंतर्गत नवकार भवन में रविवार 11अगस्त को परमात्मा नेमीनाथ का च्यवन, जन्म से लेकर पंच कल्याणक महोत्सव साध्वी दर्शन प्रभा जी एवं अन्य साध्वी जी के सानिध्य मंडल के सानिध्य में धूमधाम के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत परमात्मा का मेरू शिखर पर विभिन्न औषधियों से अद्भुत अभिषेक अलग अलग इंद्रो ने किया।सर्वप्रथम अभिषेक का लाभ मांगीलालजी लक्ष्मीलाल जी गौतमचंदजी टाटिया परिवार ने लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री वासुपूज्य महिला मंडल एवम जिनकुशल बहुमंडल के मार्गदर्शन में आयोजित किया

गया।कार्यक्रम में विशेष रूप से नवकार मंत्र पर नृत्य, माता शिवादेवी को आए 14 स्वप्नों का प्रस्तुतिकरण,इंद्र का आसन कम्पायमान होना,56 दिक्कुमारियो का नृत्य,परमात्मा की बारात, पशुओं को बाड़े से मुक्त करना,राजुल का विलाप करना तथा छ:कायके जीवो का विलाप प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में छोटे छोटे बच्चो ने शानदार प्रस्तुति दी,जिसका सभा में उपस्थित सभी लोगो ने समय समय पर करतल ध्वनि से उनका उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चो को आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट एवम रत्नत्रयी वर्षावास समिति की तरफ से पुरस्कार प्रदान कर उत्साह वर्धन किया।सम्पूर्ण कार्यक्रम के दौरान नवकार भवन का परिसर श्रावक एवम श्राविकाओं से खचाखच भरा था।सभी ने मुक्त कंठ से सभी की भूरी भूरी अनुमोदना की। चातुर्मास समिति की तरफ से सभी के गौतम प्रसादी की भी व्यवस्था की गई थी जिसका सभी ने लाभ लिया।

चातुर्मास समिति के सभी पदाधिकारी ने आयोजित होने वाले संपूर्ण कार्यक्रमों में जैन समाज के सभी वर्ग के लोगों से उपस्थिति का आग्रह किया है प्रतिदिन प्रवचन दोपहर को महिलाओं की धार्मिक क्लास और संध्याकालीन प्रतिगमन प्रतिक्रमण के साथ-साथ अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन नवकार भवन दुर्ग में लगातार चल रहा है।

Since 1972
CROWN® - TV
Choice Of Millions
LED Available 16 -20 -22 - 24 - 32-40-50-55-65

Maa Durga Electronics
9827183839
Rohit Electronics
94242-02866
Premier sales: 8959493000
A Leela Electronics: 9425507772
Reena Electronics: 9329132299
Shree Electronics: 7000827361
Authorised Distributers For Chhattisgarh
Trade Enquiry: 98262-52372

खास खबर...

सुन्दर नगर में ब्रेड बेकरी में गंदगी मिलने पर जुर्माना

रायपुर। जनशिकायत मिलने पर नगर निगम जोन 5 स्वास्थ्य विभाग की टीम ने आयुक्त अबिनाश मिश्रा द्वारा तत्काल संज्ञान में लेकर दिए गए निर्देशानुसार जोन 5 जोन कमिश्नर विमल शर्मा के नेतृत्व, जोन स्वास्थ्य अधिकारी संदीप वर्मा की उपस्थिति में जोन के तहत पण्डित सुन्दर लाल शर्मा वार्ड नम्बर 42 के सुन्दर नगर में ब्रेड बेकरी नामक दुकान में सफाई व्यवस्था का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान गंदगी से सम्बंधित जनशिकायत स्थल पर सही पायी गयी। इस पर जोन कमिश्नर के निर्देश पर सम्बंधित ब्रेड बेकरी के संचालक को भविष्य के लिए कड़ी चेतावनी देते हुए तत्काल 2000 रूपये का जुर्माना किया और प्राप्त जनशिकायत का जोन के स्तर पर त्वरित समाधान किया।

फाफाडीह मार्ग के किनारे गंदगी साफ करवाकर स्वच्छता कायम की

रायपुर। नगर पालिक निगम रायपुर के स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 के

अंतर्गत लगातार स्वच्छता अभियान प्रतिदिन प्रगति पर है। नगर निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा के आदेशानुसार नगर निगम जोन 2 स्वास्थ्य विभाग की टीम ने नगर निगम स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर तृप्ति पाणीग्रही के निर्देश जोन स्वास्थ्य अधिकारी रवि लावनिया के नेतृत्व में जोन 2 कार्यालय के समीप राजधानी शहर के मुख्य मार्ग फाफाडीह के किनारे डाली गयी वेस्टेज पाईप सहित गंदगी को सफाई मित्रों के विशेष गैंग की सहायता से उठवाकर स्वच्छता कायम की और प्राप्त जनशिकायत का जोन के स्तर पर त्वरित निदान किया। जोन 2 स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा वहाँ आसपास के दुकानदारों और लोगों के मध्य सड़क पर गंदगी नहीं फेंकने और सफाई व्यवस्था बनाये रखने में सहभागी बनने का आव्हान जनस्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाकर किया।

78 नागरिकों के आय प्रमाणपत्र तत्काल बने

जनसमस्या निवारण पखवाड़ा: 178 आवेदन का किया त्वरित निराकरण

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के निर्देशानुसार नगर पालिक निगम रायपुर के वार्डो में 27 जुलाई से 10 अगस्त तक जनसमस्या निवारण पखवाडा के अंतर्गत शिविरों का आयोजन प्रात: 10 बजे से 3 बजे तक लगाए जाने का सिलसिला चलता रहा । रायपुर नगर पालिक निगम के सभी 70 वार्डो में जनसमस्या निवारण पखवाडा अंतर्गत शिविर हेतु प्रात: 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक का समय निर्धारित किया गया था । प्रत्येक वार्ड में लगाए गए शिविर में रायपुर नगर पालिक निगम सहित विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारीगण जनसमस्या सुनकर उसका यथासंभव त्वरित निराकरण करने

निर्धारित समयावधि में उपस्थित रहे।

वार्डवासी आमजनों की सुविधा की दृष्टि से नगर पालिक निगम रायपुर द्वारा जनसमस्या निवारण पखवाडा के अंतर्गत जोन 9 के शहीद पण्डित विद्याचरण शुक्ल शहीद वार्ड के इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय जोरा के कम्युनिटी हाल में वार्ड क्रमांक 51 के तहत एक अतिरिक्त शिविर जनसमस्या निवारण पखवाड़ा के अंतर्गत लगाया गया।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री नगरीय प्रशासन एवं विकास, लोक निर्माण मन्त्री अरुण साव के निर्देश पर नगर निगम जोन क्रमांक 9 के वार्ड क्रमांक 51 में विगत दिवस लगाए गए अतिरिक्त शिविर की प्रशासनिक व्यवस्था का नगर निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा के आदेशानुसार नगर निगम जोन 9 जोन कमिश्नर संतोष पाण्डेय ने कार्यपालन अभियंता के.के. शर्मा, जोन सहायक राजस्व अधिकारी विजय शर्मा एवं सम्बंधित जोन अधिकारियों एवं स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉक्टर देवेंद्र कुमार चंद्रवंशी की उपस्थिति में जनसमस्या निवारण पखवाड़ा शिविर में पहुंचे एवं रायपुर नगर पालिक निगम के विभिन्न विभागों सहित रायपुर जिला प्रशासन एवं छत्तीसगढ़ शासन के विभिन्न शासकीय विभागों के स्टालों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के आदेशानुसार एवं उप मुख्यमंत्री नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव के निर्देशानुसार लगाए गए जनसमस्या निराकरण पखवाड़ा के तहत लगाए गए अतिरिक्त शिविर में जोन नम्बर 9 के वार्ड नम्बर 51 के तहत जोरा, लाभाण्डी, कृषक नगर, साईंनगर, प्रगति नगर आदि क्षेत्र के रहवासी बड़ी संख्या में पहुँचे और जनसमस्याओं का त्वरित समाधान शिविर स्थल पर प्राप्त किया.नगर निगम के जोन 9 के वार्ड 51 के इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय के कम्युनिटी हाल में लगाए गए शिविर में नागरिकों से कुल प्राप्त 268 आवेदनों में से 178 आवेदनों का शिविर स्थल पर ही तत्काल निराकरण कर दिया गया। शिविर में 78 नागरिकों के आय प्रमाणपत्र तत्काल स्थल पर बनाये गए. 31 नागरिकों ने अपने आधार कार्ड में तत्काल सुधार करवाया।

नक्शा बटांकन के कार्य में प्रगति नहीं लाने पर राजस्व निरीक्षकों का रुकेगा वेतन वृद्धि

राजस्व अभिलेख में आधार प्रविष्टि एवं किसान किताब की प्रविष्टि में लाएं प्रगति

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। गौरेला पेंड्रा मरवाही कलेक्टर श्रीमती लीना कमलेश मंडावी ने राजस्व विभाग के काम-काज की तहसीलवार विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने जिले में नक्शा बटांकन के 1 लाख 30 हजार से अधिक प्रकरण लंबित होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए राजस्व निरीक्षकों को पटवारी हल्का वाइज प्रतिदिन 100 नक्शा बटांकन का लक्ष्य देते हुए कार्य पूर्ण करने कहा। उन्होने राजस्व निरीक्षकों को प्रतिदिन नक्शा बटांकन का समीक्षा करने और प्रतिवेदन भू-अभिलेख शाखा में प्रस्तुत करने कहा। उन्होने कहा कि नक्शा बटांकन के कार्य में प्रगति नहीं लाने पर राजस्व निरीक्षकों का वार्षिक वेतन वृद्धि रोका जाएगा।

कलेक्टर ने ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल के अनुसार आय, जाति, निवास प्रमाण पत्र लंबित होने पर कहा कि एक भी प्रकरण लंबित नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि समय सीमा में प्रमाण पत्र जारी नहीं होने पर संबंधित एसडीएम एवं तहसीलदार के रीडर के खिलाफ कार्यवाही होगी। उन्होने तहसीदारो को खंड शिक्षा अधिकारियों

के समन्वय से स्कूली बच्चों का प्रमाण पत्र बनाने के लिए शिविर लगवाने तथा सरलीकरण प्रक्रिया के तहत जाति प्रमाण पत्र जारी करने कहा। उन्होने बैठक में उपस्थित खंड शिक्षा अधिकारियों को आपत्ति लगे प्रकरणों में चेक लिस्ट के अनुसार दस्तावेज पूर्ण कर पुन: पोर्टल में एंट्री करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जाति प्रमाण पत्र के एक भी प्रकरण वापस नहीं होना चाहिए और स्कूली बच्चों के साथ-साथ व्यक्तिगत प्रमाण पत्र भी समय सीमा में जारी करें। उन्होने राजस्व अभिलेख में आधार प्रविष्टि एवं किसान किताब की प्रविष्टि में प्रगति लाने के लिए पटवारियों को किसानों से संपर्क कर उनके आधार एवं मोबाइल नंबर प्राप्त कर प्रविष्टि में प्रगति लाने के साथ ही सभी तरह के राजस्व प्रकरणों के निराकरण का प्रतिशत बढ़ाने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए।

कलेक्टर ने धारा 114 के अधीन तैयार किए गए किसी अन्य भू-अभिलेख संबंधि कागज में गलत प्रविष्टि का सुधार अथवा उनमें प्रविष्टि संबंधि विवाद की समीक्षा के लिए तहसीलदारों को निर्देश दिए। उन्होने अविवादित नामांतरण प्रकरणों को समय सीमा के भीतर निराकृत करने एवं विवादित नामांतरण के प्रकरण समय सीमा के बाहर होने पर कारण दर्ज करने कहा। उन्होने ऐसे पुराने प्रकरण जो रिकार्ड में दर्ज में नहीं है, को भी दर्ज करने कहा। उन्होने अविवादित बटवारा प्रकरण में आदेश होने के बाद रिकार्ड दुरुस्त करने में ज्यादा समय नहीं लगाने और सीमांकन के प्रकरणों को 15 अक्टूबर के बाद करने कहा। उन्होंने नामांतरण पंजी की संख्यात्मक प्रकरणों की मदवार समीक्षा करने और रिकार्ड दुरुस्ती हेतु पटवारियों के पास लंबित 256 प्रकरणों की ऑनलाइन प्रविष्टि करने के निर्देश तहसीलदारों को दिए।

कलेक्टर ने डिजीटल हस्ताक्षरीकृत खसरों की लगातार समीक्षा करने, अभिलेख शुद्धता, खरीफ गिरदावरी कृषि वर्ष 2024-25 में फील्ड में जाकर गिरदावरी पूर्ण करने, आरबीसी 6-4 के तहत शत प्रतिशत प्रकरणो का निराकरण करने कहा। उन्होंने स्वामित्व योजना, विभिन्न कार्यालयों एवं सामाजिक भवनों के लिए भूमि आवंटन, भू-अर्जन के लंबित प्रकरणों में कार्यवाही, मुआवजा वितरण, वसूली, अतिक्रमण, वन अधिकार पत्रों पर उत्तराधिकारियों का नाम जोडने सहित राजस्व से संबंधित सभी कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यों में प्रगति लाने और निराकृत प्रकरणों को पोर्टल में दर्ज करने कहा, ताकि कार्यो का परिणाम दिखना चाहिए।

सांसद बृजमोहन ने परिवार संग मनाया सावन झूला उत्सव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मानसून सत्र के बाद दिल्ली से लौटे सांसद बृजमोहन अग्रवाल के निज आवास पर प्रति वर्ष की भांति सावन झूले का आयोजन किया गया। जिसमे परिवार के सदस्यों के साथ ही उनके पुराने मित्र अपने परिवार के साथ उपस्थित रहे, और सावन के गीतों के साथ ही झूले का आनंद लिया।

इस अवसर बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि, सावन का महीना हिंदू धर्म में विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है। यह माह भगवान शिव की उपासना का विशेष समय है। जो भक्ति, ध्यान, और प्रकृति के प्रति प्रेम का प्रतीक है। सावन का महीना वर्षा ऋतु का भी समय होता है, जो धरती की उर्वरता, हरियाली, और जीवन के पुनरुत्थान का प्रतीक है। यह पर्व सभी के जीवन मे खुशहाली लेकर आये। अच्छी बारिश हो,अन्नदाता किसानों के साथ ही सभी छत्तीसगढ़वासियों का जीवन खुशहाल हो यही भगवान भोले शंकर से प्रार्थना करते हैं।

मोक्ष सप्तमी पर बड़ा मंदिर में मनाया भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर (लघु तीर्थ) पार्श्वनाथ भगवान के बेदी के समक्ष प्रतिदिन चल रही श्रमण संस्कृति आध्यात्मिक प्रयोगशाला में 11 अगस्त, श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन जैन धर्म के 23 वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव पूर्वक मनाया गया। पूर्व उपाध्यक्ष श्रेयश जैन बालू ने बताया कि आज जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं और जैन धर्म के अनुसार श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मोक्ष सप्तमी के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन दिगंबर जैन मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा-अर्चना, शांतिधारा कर निर्वाण लाडू चढ़ाने की प्रथा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार जिसका मोक्ष हो जाता है उसका मनुष्य भव में जन्म लेना सार्थक हो जाता है। जब तक संसार

है तब तक चिंता रहती है, जहां मोक्ष का पूर्णरूपेण क्षय हो जाता है वहीं मोक्ष हो जाता है। अत: हमें अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए मोहरूपी शत्रु का नाश करना पड़ता है। इसीलिए अत: सभी का सम्मान करना चाहिए। सब बड़ों के प्रति विनय भाव रखना चाहिए, क्योंकि विनय ही मोक्ष का द्वार है। आज प्रात: 8 बजे पार्श्वनाथ भगवान को पाण्डुक क्षीला में विराजमान कर प्रसूक जल से रजत कलशों के माध्यम से अभिषेक किया गया।साथ ही रिद्धि सिद्धि सुखशांति प्रदाता शांति धारा भी की गई। भगवान की संगीतमय आरती कर के सभी ने अष्ठ द्रव्यों से निर्मित अर्घ्य से भगवान का पूजन कर निर्वाण कांड पढ़ कर निर्माण लाडू चढ़ाए। पूरा जिनालय पार्श्वनाथ भगवान के जयकारों से गुंजायमान रहा।

मोक्ष सप्तमी के अवसर पर विशेष रूप से श्रेयश जैन बालू, डॉ देवकुमार जैन, श्रद्धेय जैन विक्की, नीरज जैन, महेंद्र जैन, समित जैन, राशु जैन, राजेंद्र उमट्ठे, आदेश जैन बंटी, शैलेंद्र अक्षत जैन,रवि जैन कुम्हारी, सुनील जैन,धीरज जैन, संदीप जैन, लोकेश जैन, सुजीत जैन, ऋषि जैन के साथ महिलाए उपस्थित थी।

छत्तीसगढ़ सिक्ख ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसियेशन का आयोजन

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का 125 लोगों ने उठाया लाभ

रायपुर। छत्तीसगढ़ सिक्ख ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसियेशन द्वारा रविवार को पुरैना स्थित शासकीय स्कूल में ग्रामवासियों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। एसोसियेशन के संयोजक जी.एस. बॉम्बरा ने बताया कि शिविर में लगभग 125 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई। इसमें सर्दी-खांसी, कंजक्टिवाइटिस, पीठ और जोड़ों के दर्द, हृदय रोग, स्त्री रोग, और नेत्र रोगों की विशेष जांच की गई। इसके साथ ही सभी उपस्थित लोगों के मधुमेह और ब्लड प्रेशर की भी जांच की गई, जबकि 25 मरीजों का ईसीजी भी किया गया।

इस शिविर में छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. आनंद सक्सेना की नेत्र जांच की मोबाइल यूनिट एम्बुलेंस के माध्यम से कई मरीजों के आंखों की जांच की गई। शिविर में जांच कराने वाले मरीजों को 5 दिन की मुफ्त दवाइयां भी प्रदान की गईं। ग्राम पुरैना और आसपास के क्षेत्रों के लोगों ने इस शिविर में आकर अपने स्वास्थ्य की जांच कराई।

इस शिविर में एसोसियेशन के मेडिकल कमेटी के प्रमुख हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. कुलदीप सिंह छाबड़ा, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. जीनेश जैन, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. सत्यन सोनी, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रूही जैन, नेत्र रोग विशेषज्ञ रेशम कुलदीप, और एक्युप्रेशर थेरेपिस्ट राजपाल सिंह ने अपनी सेवाएं दीं। एसोसियेशन के पदाधिकारियों ने इन सभी डॉक्टरों के सेवाभावी कार्य की सराहना करते हुए उन्हें एप्रिसियेशन पत्र प्रदान किया।

इस अवसर पर एसोसियेशन के अध्यक्ष एच.एस. धींगरा, सचिव बी.एस. सलूजा, और अन्य पदाधिकारी जैसे दीप सिंह जब्बल, ए.एस. प्लाहा, प्रोफेसर बी.एस. छाबड़ा, जगदीश सिंह जब्बल, लखिन्दर सिंह चावला, अजीत सिंह राजपाल, सुखबीर सिंह सिंघोत्रा, भूपिन्दर सिंह खालसा, श्रीमती रविन्द्र कौर बॉम्बरा, श्रीमती पिंकी जब्बल, श्रीमती हरमिन्दर कौर सलूजा, और श्रीमती हरप्रीत कौर धींगरा उपस्थित रहे।

एसोसियेशन के महावीर नगर गुरुद्वारा में नियमित रूप से संचालित क्लिनिक में डॉक्टरों से परामर्श लिया जा सकता है, और एसोसियेशन द्वारा संचालित मेडिकल स्टोर में कम कीमत पर जेनेरिक दवाइयां भी उपलब्ध हैं। क्लिनिक में मेडिसिन, हड्डी रोग, स्त्री रोग विशेषज्ञ, और एक्युप्रेशर चिकित्सा सेवाएं भी नियमित रूप से दी जाती हैं। कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति वहां आकर अपने स्वास्थ्य की जांच करा सकता है और आवश्यक उपचार प्राप्त कर सकता है।

निगम के आयोजन में मिनीमाता को पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

रायपुर। छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद समाज सुधारक मिनीमाता को पुण्यतिथि पर सादर नमन करने नगर पालिक निगम रायपुर के संस्कृति विभाग के तत्त्ववधान में नगर निगम जोन क्रमांक 2 के सहयोग से पुष्पांजलि कार्यक्रम राजधानी शहर रायपुर में पुराना बस स्टेण्ड परिसर पंडरी स्थित प्रतिमा स्थल के समक्ष रखा गया। उक्त संक्षिप्त आयोजन में पहुंचकर राजधानी शहर के गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, नवयुवकों सहित सतनामी समाज के पदाधिकारीगणों ने बड़ी संख्या में प्रतिमा स्थल के समक्ष पहुंचकर मिनीमाता को पुण्यतिथि पर सादर नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

वृक्षारोपण अभियान : एक पेड़ शहीद के मां के नाम

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। पुलिस महानिरीक्षक बस्तर रेंज जगदलपुर के मार्गदर्शन पर विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर पुलिस अधीक्षक इंदिरा कल्याण एलिसेला के निर्देशन पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भानुप्रतापपुर संदीप पटेल, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस प्रशांत सिंह पैकरा भानुप्रतापपुर, रामेश्वर देशमुख थाना प्रभारी भानुप्रतापपुर एवं स्टाफ के द्वारा शाहिद विष्णु राम लड़िया ग्राम बोगर, शहीद शालिक राम मरकाम ग्राम चवेला के ग्राम में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कार्यालय भानुप्रतापपुर एवं थाना परिसर व अन्य शासकीय कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम पोदला उरकना अभियान एक पेड़ शहीदों के मां के नाम वृक्षारोपण किया गया । इस अवसर पर शहीद परिवार एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों व नागरिकगण उपस्थित रहे।

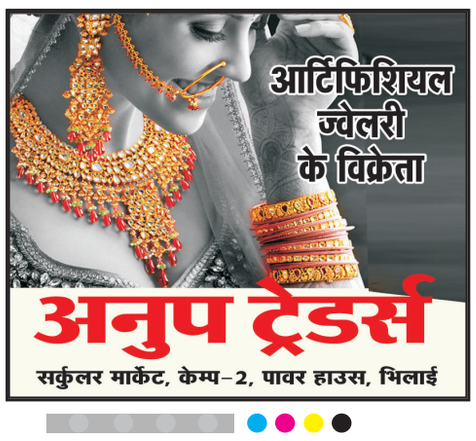

केके मेनन की वेब सीरीज शेखर होम का ट्रेलर जारी, 14 अगस्त को जियो सिनेमा पर रिलीज होगी वेब सीरीज

के के मेनन और रणवीर शौरी डिटेक्टिव ड्रामा सीरीज शेखर होम के साथ देसी शर्लक होम्स लाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। जियो सिनेमा ने शेखर (के के मेनन) की दुनिया की एक दिलचस्प झलक दिखाते हुए ट्रेलर जारी किया। शेखर अपनी बेजोड़ जासूसी प्रतिभा के साथ अपराध और रहस्य के जाल को उजागर करने की कोशिश करेगा।

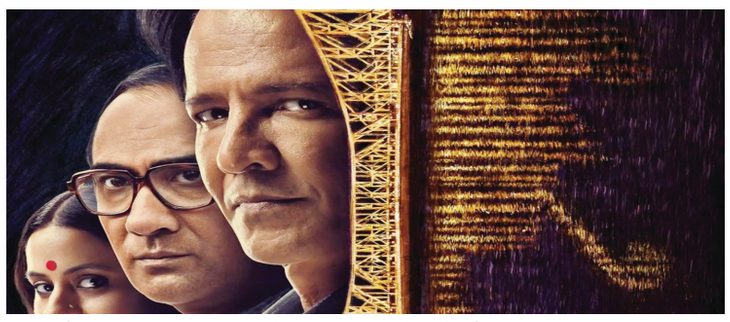

इसके अलावा इस सीरीज में रणवीर शौरी, रशिका दुग्गल और कीर्ती कुलहारी भी मुख्य किरदार में नजर आएंगे। शेखर होम एक ओरिजनल फिक्शनल सीरीज है जो सर आर्थर कॉनन डॉयल के उन साहित्यिक कामों प्रेरित है जो सार्वजनिक डोमेन में हैं। 6 एपिसोड की बनी इस सीरीज को बीबीसी स्टूडियो प्रोडक्शंस इंडिया ने प्रोड्यूस किया है। रोहन सिप्पी और श्रीजीत मुखर्जी इसके निर्देशक हैं।

सीरीज की कहानी 1990 के दशक की शुरुआत में बंगाल के शांत शहर लोनपुर पर गढ़ी गई है। ये एक ऐसे दौर की कहानी है जब टेक्नोलॉजी के बारे में लोग जानते नहीं थे और ह्यूमन इंटेलिजेंस ही एकमात्र ऐसी चीज थी जिस पर भरोसा किया जा सकता था। के के मेनन ने शेखर होम की मुख्य भूमिका निभाई है। इस किरदार में वो काफी शानदार नजर आ रहे हैं। उन्हें एक सहयोगी की जरूरत होती है जब उनकी मुलाकात जयव्रत साहनी यानी रणवीर शौरी से होती है। दोनों की जोड़ी बन जाती है और ये पूर्वी भारत की मिस्ट्री सॉल्व करने की जर्नी पर निकल पड़ते हैं। दोनों मिलकर मर्डर से लेकर ब्लैकमेल और यहां तक कि सुपर नेचुरल इवेंस्ट्स जैसी कई मिस्ट्रीज सॉल्व करते हैं। सीरीज 14 अगस्त को जियो सिनेमा पर रिलीज होगी।

संदीपा धर ने बताया कि उन्होंने अपनी बड़ी बकेट लिस्ट कैसे चेक की

अभिनेत्री संदीपा धर ने बताया कि उन्होंने हॉट बैलून राइड को अपनी बड़ी बकेट लिस्ट से चुना है, जिसे उन्होंने सबसे शानदार चीज़ बताया है। संदीपा ने इंस्टाग्राम पर अपनी तुर्की छुट्टी की कई तस्वीरें शेयर कीं, जहाँ उन्होंने तुर्की के कप्पाडोसिया में हॉट बैलून राइड की कोशिश की। तस्वीरों में वह अपने दोस्तों के साथ राइड पर नज़र आ रही हैं, जिन्हें उन्होंने अपने पसंदीदा इंसान के रूप में टैग किया है।

कैप्शन में उन्होंने लिखाः ऊपर, ऊपर और दूर! इस दिन के बारे में सोचना बंद नहीं कर सकती। निस्संदेह, हॉट एयर बैलून में सवारी करना मेरे द्वारा अब तक किए गए सबसे शानदार कामों में से एक है। मेरे लिए यह एक बहुत बड़ी बकेट लिस्ट है!

अनुभव का वर्णन करते हुए, संदीपा ने लिखाः यह बहुत खास था क्योंकि मुझे यह अनुभव अपने पसंदीदा इंसानों के साथ साझा करने का मौका मिला। क्या अविश्वसनीय अनुभव था! बिल्कुल अविस्मरणीय।

श्रीनगर में जन्मी इस अभिनेत्री ने 2010 में अभिनेता अक्षय ओबेरॉय के साथ इसी लाइफ में से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्हें हीरोपंती, गोल्लू और पप्पू, ग्लोबल बाबा, 7 ऑवर्स टू गो, कार्टेल जैसी फिल्मों में देखा गया और उन्होंने सतीश कौशिक द्वारा निर्देशित पंकज त्रिपाठी अभिनीत फिल्म कागज़ में विशेष भूमिका निभाई।

संदीपा को आखिरी बार इम्तियाज अली की मेडिकल ड्रामा डॉ. अरोड़ा में देखा गया था। इस सीरीज में कुमुद मिश्रा, राज अर्जुन और पितोबाश त्रिपाठी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। उनकी अगली फिल्म फिरकी है जिसमें नील नितिन मुकेश, करण सिंह ग्रोवर, जैकी श्रॉफ, के के मेनन हैं। इसकी घोषणा सालों पहले की गई थी, हालांकि फिल्म अनिश्चित काल के लिए रोक दी गई है।

संदीपा की अन्य प्रतिभाओं की बात करें तो अभिनेत्री भरतनाट्यम नृत्यांगना हैं। उन्होंने श्यामक डावर और टेरेंस लुईस से जैज़ और कंटेम्परेरी भी सीखी है।

कीर्ति सुरेश की रघु ताथा का मजेदार ट्रेलर रिलीज

दिल को भाएगा साउथ हसीना का देसी अंदाज

साउथ फिल्मों की खूबसूरत और अभिनय में पक्की एक्ट्रेस कीर्ति सुरेश एक बार अपने दर्शकों का मनोरंजन करने आ रही हैं। कीर्ति की अपकमिंग कॉमेडी ड्रामा फिल्म रगु ताथा का मजेदार ट्रेलर रिलीज हो गया। रगु ताथा में कीर्ति का रोल बेहद सीधा सादा होने के साथ-साथ तेज-तर्रार भी मालूम पड़ रहा है। रगु ताथा के ट्रेलर में कीर्ति ही छाई हुई हैं।

रघु ताथा के मेकर्स ने फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया है। ट्रेलर में कीर्ति सुरेश का बेहद चुलबुला अंदाज भी देखने को मिल रहा है। हर सीन में कीर्ति अपने फैंस का दिल जीतने का काम कर रही है। यह एक फैमिली एंटरटेनर फिल्म साबित होने वाली है। बता दें, फिल्म रघु ताथा को सुमन कुमार ने डायरेक्ट किया है। कांतारा और केजीएफ के मेकर्स फिल्म रघु ताथा लेकर आए हैं। वहीं। फिल्म रघु ताथा को सेंसर बोर्ड ने हाल ही में यू (यूनिवर्सल) सर्टिफिकेट सौंप है, यानी फिल्म सेंसर बोर्ड के नजर में हर सीन में पास हो गई है।

फिल्म में कीर्ति ने एक सशक्त महिला के किरदार में नजर आने वाली हैं, जिसमें वह हिंदी थोपे जाने का विरोध करती दिखेंगी ट्रेलर के कुछ सीन में वह शरारती अंदाज में हिंदी सीखती भी दिख रही हैं।

कीर्ति के साथ-साथ फिल्म में एमएस भास्कर, रविंद्र विजय, देवदर्शिनी, राजीव रविंद्रनाथन और जया कुमार अहम रोल में नजर आने वाले हैं। फिल्म में सेन रॉल्डन का म्यूजिक है। टीएस सुरेश एडिटिंग और यामिनी यग्नामूर्ति ने सिनेमैटोग्राफी का काम संभाला है।

वहीं, 15 अगस्त पर रघु ताथा का बॉक्स ऑफिस पर विक्रम की तंगलान, अंधाघन औ डिमोट कॉलोनी 2 से होगा। इस दिन साउथ और हिंदी सिनेमा से कुल चार फिल्में पहले ही रिलीज होने जा रही है।

रिवीलिंग गाउन पहन निक्की तंबोली ने दिए किलर पोज, एक्ट्रेस की हॉटनेस ने बढ़ाया सोशल मीडिया का पारा

टीवी और फिल्मों की जानी-मानी अभिनेत्री निक्की तंबोली हमेशा ही अपने बोल्ड लुक्स के लिए चर्चा में रहती हैं। हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वह बेहद ही हॉट और स्टनिंग लग रही हैं।

इस वीडियो में निक्की ने ग्रे कलर का रिवीलिंग गाउन पहना हुआ है और उन्होंने लाइट मेकअप के साथ अपने बालों को खुला रखा है। निक्की के इस वीडियो को देखकर उनके फैंस काफी उत्साहित हैं और जमकर कमेंट्स कर रहे हैं। यह वीडियो सोशल मीडिया का पारा हाई कर रहा है। कुछ फैंस ने उन्हें बेहद खूबसूरत बताया है, तो कुछ ने उनके लुक की तारीफ की है। निक्की का यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और लोग इसे खूब पसंद कर रहे हैं।

बिग बॉस के घर से लोगों के दिलों में पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस निक्की तंबोली अपनी हॉटनेस से फैंस पर कहर बरपाए रहती हैं। उनकी तस्वीरें फैंस के दिलों पर कहर बरपाती हैं।

निक्की तंबोली अपने फैंस के साथ जुड़ने के लिए सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। फैंस भी एक्ट्रेस निक्की तंबोली की इन तस्वीरों को बेहद ही पसंद कर रहे हैं। एक्ट्रेस अपनी फोटोज और वीडियोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं

निक्की तंबोली के इंस्टाग्राम पर 3.6 मिलियन फॉलोवर्स हैं। एक्ट्रेस निक्की तंबोली अपने फैंस के लिए निजी और प्रोफेशनल पलों के सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती हैं।

एग्जाम में अच्छे नंबर लाने के लिए बच्चों को जरूर सिखाएं ये बातें, खुद से करने लगेंगे मेहनत

हर माता-पिता अपने बच्चों को समझदार और इंटेलिजेंट बनाना चाहते हैं। पेरेंट्स चाहते हैं कि उनका बच्चा पूरी क्लास में सबसे अच्छे नंबर लेकर आए और हर एग्जाम में टॉप करें। लेकिन ध्यान रहे बच्चों को एग्जाम में अच्छे नंबर लाने के लिए सिर्फ पढ़ाई ही काफी नहीं है।

इसके अलावा आपको उन्हें कुछ महत्वपूर्ण बातें सिखाना होगी। आप उन्हें अच्छा इंसान बनाने के लिए किताबी कीड़ा न बनाएं, बल्कि उन्हें खुद से मेहनत करने और बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें।

ऐसे बनाएं बच्चों को ज्ञानी

अगर वाकई में आप अपने बच्चों को समझदार और ज्ञानी बनाना चाहते हैं, तो कुछ काम जरूर करें। बच्चों को ज्ञानी बनने के लिए आपको बच्चों की इच्छा के हिसाब से छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।

बच्चों के लिए टाइम टेबल बनाएं

अगर आप आपके बच्चों को बहुत सारा पढ़ने के लिए दे देते हैं, तो इससे बच्चा बोर होने लगता है और वह ठीक से पढ़ाई नहीं कर पता है। इसलिए आप एक टाइम टेबल के हिसाब से उसे पढ़ने के लिए बिठाएं।

पढ़ाई के वक्त मोबाइल रखें दूर

जब आपका बच्चा पढ़ाई करने बैठे, तो उसके आसपास से उन चीजों को हटा दें, जो बच्चे का ध्यान भटका सकती है। पढ़ाई के वक्त अपने बच्चों का मोबाइल फोन, कॉमिक बुक जैसी चीजे उससे दूर कर देना चाहिए।

पसंदीदा सब्जेक्ट को करें कवर

सबसे पहले बच्चों को वह चीज पढ़ने को कहे, जो उसे काफी पसंद है। क्योंकि हर बच्चे का अपना एक पसंदीदा सब्जेक्ट होता है। फिर थोड़ा ऐसे सब्जेक्ट के बारे में पढ़ने को कहे जो उसे बिल्कुल नहीं पसंद। इससे आपका बच्चा धीरे-धीरे 2 से 3 घंटे के समय में हर सब्जेक्ट का एक चैप्टर कंप्लीट कर सकेगा।

अब आप पहले दिन पड़ा हुआ सभी सब्जेक्ट का ओरल टेस्ट ले लें। इससे बच्चें को सारी चीजें याद रहेगी और बच्चा आसानी से अच्छा स्कोर कर सकेगा। इसके अलावा आप अपने बच्चे का हर हफ्ते लिखित में टेस्ट ले सकते हैं।

सकारात्मक सोच रखें

अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा पूरी क्लास में टॉप करें, तो आपको अपनी और बच्चे की सोच को सकारात्मक रखना चाहिए। अगर वह एक पेपर अच्छा नहीं दे पता है, तो उसे दूसरे पेपर को अच्छी तरह करने के लिए प्रेशर ना दें, बल्कि उसे समझाएं और प्रोत्साहन दें। पेपर को देखते से ही बच्चा घबराए ना इसलिए आप उसे पहले से ही सकारात्मक भाव से समझा दें और उसे सारे प्रश्नों को हल करने के लिए कहें।

रट्टा मारकर एग्जाम ना दें

अधिकतर बच्चे एक ही लाइन को 10 बार पढ़ते हैं और रट्टा मार कर एग्जाम देने जाते हैं। ऐसे में कई बार उत्तर लिखते वक्त वे कंफ्यूज हो जाते हैं। इससे बचने के लिए आप अपने बच्चों को रट्टा मारने ना दे। बल्कि हर प्रश्न को दो से तीन बार लिखकर समझने के लिए कहें। ऐसा करने से आपका बच्चा आसानी से अच्छे स्कोर हासिल कर सकेगा और पूरी क्लास में टॉप करेगा।

बादाम का दूध पीना सेहत के लिए कितना फायदेमंद जानें क्या कहते हैं एक्सपर्ट

हेल्दी और फिट रहने के लिए रोजाना बादाम का दूध पीना फायदेमंद होता है। आजकल फिटनेस फीक और दूध से एलर्जी वाले लोग नॉन-डेयरी मिल्क पसंद कर रहे हैं। आलमंड मिल्क यानी बादाम का दूध भी एक नॉन-डेयरी मिल्क है। इसमें भर-भरकर पोषक तत्व होते हैं।

लो कैलोरी ड्रिंक्स की वजह से काफी लोग इसे पीना पसंद करते हैं। इस दूध (द्यद्वशठ्ठस्त्र स्त्रद्यद्य) के पीने से शरीर की इम्यूनिटी तेजी से बढ़ती है और शरीर बीमारियों से दूर रहता है। बादाम में मिलने वाला कैल्शियम, मैग्नीशियम, विटामिन के, विटामिन ई शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं बादाम का दूध कितना फायदेमंद है।।।

बादाम का दूध कितना पावरफुल

एक्सपर्ट्स के मुताबिक, बादाम मिल्क बनाने का कोई फिक्स तरीका नहीं है। अलग-अलग प्रोडक्ट्स से बनने के लिए इसमें अलग-अलग पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। फीके बादाम मिल्क में प्रोटीन और कार्ब कंटेंट काफी कम होते हैं। बादाम के दूध में गाय-भैंस के दूध में पाया जाने वाले प्रोटीन, कैल्शियम, पोटैशियम और विटामिन डी तो पाया ही जाता है, साथ ही कई अन्य पोषक तत्व भी पाए जाते हैं, जो ओवरऑल हेल्थ के लिए फायदेमंद होते हैं।

बादाम के दूध के फायदे

- एलर्जी भगाए : ऐसे लोग जिन्हें दूध या डेयरी प्रोडक्ट्स से एलर्जी है, उनके लिए प्लांट बेस्ड बादाम मिल्क काफी अच्छा विकल्प होता है। इसमें कई तरह के पोषक तत्व मिल जाते हैं। इस दूध से कई तरह की बीमारियां दूर ही रहती हैं।
- इम्यूनिटी बढ़ाए : बादाम मिल्क मेंगाय के दूध जितना ही प्रोटीन पाया जाता है। इसमें बीमारियों से लड़ने वाला आइसोफ्लेवोंस भरपूर पाया जाता है। इसे पीने से इम्यूनिटी बढ़ती है और शरीर रोगों से लड़ने में सक्षम बनता है।

हार्ट व कैंसर की समस्या से बचाए

बादाम मिल्क में लो कैलोरी और लो प्रोटीन पाया जाता है। इसमें फायदेमंद अनसैचुरेटेड फैट काफी कम मात्रा में मिलता है। बादाम बेहद शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है। इसके तत्व हार्ट डिजीज और कैंसर जैसी समस्याओं से भी बचा सकते हैं।

खास खबर

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित हो रही है हर घर तिरंगा कार्यक्रम

रायगढ़। केंद्र सरकार नई दिल्ली एवं संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा शहीदों, क्रांतिकारियों, स्वंतत्रता संग्राम सेनानियों के सम्मान के लिये 9 से 15 अगस्त 2024 तक तिरंगा यात्रा, तिरंगा रैली, तिरंगा दौड़ और मैराथन, तिरंगा प्रतिज्ञा, तिरंगा सम्मान, तिरंगा सम्मान का निबंध, चित्रकला एवं वाद विवाद, तिरंगा कॉनसर्ट्स, तिरंगा कैनवास, तिरंगा प्रतिज्ञा, तिरंगा सेल्फी, तिरंगा सम्मान, तिरंगा मेला जैसे कार्यक्रम आयोजित कर जनमानस में जागृति लाने का निर्देश दिये गये है। निर्देश के परिपालन में कलेक्टर कार्तिकेया गोयल एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जितेंद्र यादव के मार्गदर्शन में जिले के स्कूलों में शनिवार 10 अगस्त को बच्चों को तिरंगा शपथ दिलाया गया। साथ ही तिरंगा का सम्मान घर-घर और आमजन पहुचे इसके लिये स्कूलों में साईकल रैली और तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत सभी शिक्षकों, बच्चों, पालकों, आमजन, जनप्रतिनिधियों, शाला प्रबन्ध समिति के सदस्यों से अपने घर में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिये प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही सभी से आग्रह किया जा रहा है कि अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुये सेल्फी वेबसाइट हर घर तिरंगा डॉट कॉम में अपलोड करें। राज्य के निर्देश के अनुरूप रायगढ़ जिले के सभी शासकीय शालाओं में आगामी 13 अगस्त को तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।

एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप में प्रगति के साक्षी सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन किया

कोरबा। प्रदीप्त कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक पश्चिम क्षेत्र- स्स्ट और अश , ने 3 अगस्त 2024 को एनटीपीसी कोरबा में प्रगति के साक्षी सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन किया। यह नया जोड़ कोरबा की 1983 में स्थापना के बाद की अद्भुत वृद्धि और उपलब्धियों का उत्सव है। प्रदीप्त कुमार मिश्रा ने इस सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन क्र॥ कोरबा राजीव खन्ना, सभी GMs और एनटीपीसी कोरबा के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। प्रगति के साक्षी सेल्फी पॉइंट प्लांट के दशकों की यात्रा और विकास का दृश्य प्रमाण है। इसमें एनटीपीसी कोरबा की उपलब्धियों और प्रगति को दर्शाने वाले विभिन्न डिस्प्ले और इंस्टॉलेशंस शामिल हैं, जो आगंतुकों और कर्मचारियों को प्लांट के इतिहास के साथ जुड़ने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। सेल्फी पॉइंट के साथ-साथ एक नई और रोमांचक पहल भी शुरू की गई है: कोरबा टाउनशिप में सात पेड़ों को प्लांट की प्रत्येक यूनिट के सम्मान में नामित किया गया है। यह पहल न केवल पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति प्लांट की निरंतर प्रतिबद्धता का प्रतीक है बल्कि स्थानीय समुदाय के साथ इसके संबंध को भी मजबूत करती है। प्रदीप्त कुमार मिश्रा द्वारा प्रगति के साक्षी सेल्फी पॉइंट और पेड़-नामकरण समारोह का उद्घाटन एनटीपीसी कोरबा की विरासत का सम्मान करने और इसके हितधारकों के बीच गर्व और पर्यावरणीय देखभाल की भावना को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

सड़कों से मवेशी हटाने का कार्य लगातार जारी

कोरबा। नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा मुख्य मार्गो, संपर्क सड़कों एवं सार्वजनिक स्थानों से काऊकेचर के माध्यम से मवेशियों को हटाने का कार्य लगातार किया जा रहा है। वही पशुपालको को कड़ी हिदायत दी जा रही है कि वे अपने मवेशियों को सड़कों पर खुला न छोड़े, आवागमन व्यवस्था में सहयोग दे । निगम के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.संजय तिवारी ने बताया कि आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई के निर्देशन में निगम द्वारा तानसेन चौक से सीतामणी तक एवं विभिन्न उपनगरीय क्षेत्रों , आंतरिक संपर्क सड़कों में अभियान चलाकर सड़कों पर स्वच्छंद विचरण करने वाले मवेशियों को काऊकेचर के माध्यम से सुरक्षित रूप से उठाया जा रहा है तथा यह अभियान आगे निरंतर जारी रहेगा । उन्होंने बताया कि निगम अमले द्वारा पशुपालकों, डेयरी संचालकों को लगातार हिदायत दी जा रही है कि वे अपने मवेशियों को सड़कों, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छंद विचरण हेतु न छोड़े।

कबीरधाम के कण-कण में शिव का वास

अमरकंटक से डोंगरिया और पंचमुखी बुढ़ा महादेव से भोरमदेव मंदिर तक गुंज रहा है हर-हर महादेव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। पवित्र श्रावण माह का कल चौथा सोमवार है। बीते इस पूरे माह में छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले से लेकर मध्यप्रदेश की अमरकंटक तक बोल-बम, बम-बोल और हर-हर महादेव का गुंजायमान होने लगा है। ऐसी ही नजारा पड़ोंसी जिले बेमेतरा, मुंगेली और राजानांदगांव के सरहदी क्षेत्रों से आने वाले पदयात्रियों और कांवड़ियो में उत्साह और उमंग देखने को मिल रहा है। इस बार अमरकंटक से मां नर्मदा की जल लाने वाले कांवड़ियों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है।

कांवड़ियो की बढ़ती संख्या को देखते हुए उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा के पहल एवं निर्देश पर ज़िला बोल बम समन्वय समिति और कबीरधाम जिला प्रशासन द्वारा कांवडियों की मूलभूत सुविधाओं, जैसे उनके ठहरने की व्यवस्था, उनके प्राथमिक स्वास्थ्य की व्यवस्था सहित अन्य मूलभूत सुविधा प्रदान किया जा रहा हैं। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा के पहल एवं निर्देश पर ज़िला बोल बम समन्वय समिति के सदस्य पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अनिल ठाकुर, दौवा गुप्ता, सुधीर केशरवानी, निशांत झा अमरकंटक से लेकर कबीरधाम जिले में सावन मास में आने वाले श्रद्धालु और कांवरियों को मुलभूत सुविधाएं देने के लिए लगे हुए है। ज़िला बोल बम समन्वय समिति के सदस्यों ने बताया कि उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा के निर्देश पर अमरकंट से आने वाले कांवरियों के विश्राम के लिए 20 से अधिक स्थानों में विशेष व्यवस्था की गई है। इसके अलावा कवर्धा के ऐतिहासिक भोरमदेव मंदिर के सपीम अलग अलग समाजिक भवन व विशेष वाटर फरुप टेंट लगाकर विश्राम शिविर बनाई गई है। श्रद्धालु और कावरियों को मूलभूत सुविधाएं देने के लिए ज़िला बोल बम समन्वय समिति, जिला प्रशासन के पूरा अमला, कोटवार से लेकर प्रशासनिक अधिकारी, नगरीय निकायों के अमले और अन्य सुविधाएं सहित पुलिस के जवान सुरक्षा और यातायात व्यवस्था बनाने में लगे हुए है। अंमरकंटक से लेकर भोरमदेव मंदिर पहुंच तक मार्ग में 15 से अधिक स्थानों पर स्वास्थ शिविर की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा जलेश्वर महादेव डोंगरिया, कवर्धा स्थित पंचमुखी बुढ़ा महादेव मंदिर और भोरमदेव मंदिर के समीप स्वास्थ्य शिविर लगाई जा रही है, जिसमें स्वास्थ्य विभाग की टीम स्टॉप नर्स से लेकर ड्रेसर और चिकित्सकों की विशेष ड्यूटी लगाई गई है। इसके अलावा इस मार्ग में आने वाले सभी स्वास्थ्य केन्द्रों श्रद्धालु एवं कांवरियों को स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा की नगरानी में कांवड़ियों, श्रद्धालुओं के लिए मृत्युंजय आश्रम में विशेष व्यवस्था बनाई गई है। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के पहल पर पवित्र श्रावण मास में अमरकंटक से कवर्धा जलाभिषेक करने वाले कांवड़ियों और श्रद्धालुओं के लिए प्रतिदिन मृत्युंजय आश्रम में नि:शुल्क ठहरने और भोजन की व्यवस्था की जा रही हैं। इस भोजन में कांवरियों के लिए दाल-भात-सब्जी से लेकर मीठा जैसे खीर, पुड़ी व हलवे भी नि:शुल्क दी जा रही है।

कबीरधाम कवर्धा का नाम जुबां पर आते ही बाबा भोरमदेव मंदिर की प्रतिबिम्ब दिखाई देती है। मैकल पर्वत के तलटली पर पहाड़ियां से घिरा हुआ बाबा भोरमदेव मंदिर का शिवालय वैसे तो पूरे साल भर हर-हर महादेव से गुंजायमान रहता है। लेकिन पवित्र सावन माह का प्रारंभ होते ही यहां पहले सोमवार से हजारों भक्तों और कांवरियों का आने का सिलसिला शुरू हो जाता है। सावन मास के तीन सोमवार से अब तक बाबा भोरमदेव मंदिर में लगभग 02 लाख से अधिक श्रद्धालुओं का आगमन हो चुका है। वहीं हजारों कांवरियों द्वारा बाबा भोरमदेव मंदिर के गर्भ गृह में विराजित शिव लिंग का जलाभिषेक किया जा चुका है। कवर्धा के अलग-अलग बोलबम समिति के कांवरियों द्वारा मध्यप्रदेश के अमरकंटक से मां नर्मदा नदी की पवित्र जल कांवर में लेकर 180 किलोमीटर की जंगल-पहाड़ियों और पथरीलि रास्तों से होते हुए पदयात्रा करते हुए कबीरधाम जिले के हनुमंत खोल से गुजरकर जिले के जलेश्वर महोदव में प्रथम आगमन होता है।

विष्णु सरकार आदिवासी भाई-बहनों के विकास के लिए संकल्पित होकर कर रही कार्य

श्रीकंचनपथ न्यूज

कोरबा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर कोरबा जिला अंतर्गत ग्राम बोइदा में आयोजित मूलनिवासी महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के वाणिज्य, उद्योग और श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन, विशिष्ट अतिथि के रूप में कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल शामिल हुए।

इस अवसर पर वाणिज्य, उद्योग और श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन ने शहीद वीर नारायण सिंह, रानी दुर्गावती और बिरसा मुंडा के तैल्यचित्र की पूजन-अर्चन कर समाज के सभी लोगों को विश्व आदिवासी दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दी। श्री देवांगन का आदिवासी परंपरा की विशेष पहचान फेटा (पगड़ी), कलगी, छिट और तिलक लगाकर स्वागत अभिनंदन किया गया।

कैबिनेट मंत्री श्री देवांगन ने विश्व आदिवासी दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि आज हम सब इस समाज के लोग विश्व आदिवासी दिवस पर एक साथ उपस्थित हुए है यह हमारे आदिवासी समाज के एकता का प्रतीक है। उन्होंने इस क्षेत्र में समाज के प्रमुखों की प्रशंसा करते हुए बताया कि अपने समाज को एक जुट रख कर अपने समाज, अपनी परंपरा को बचाएं रखने का प्रयास करना बहुत ही सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा की प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार आदिवासी भाई बहनों के विकास के लिए संकल्पित होकर कार्य कर रही है। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार में बढ़ी घोषणाएं पूरी की जा रही है। महतारी वंदन योजना की राशि हर महीने बहनों को मिल रही है। साथ ही और भी बहुत सारी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। कार्यक्रम में बच्चों में मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रफुल्ल तिवारी, नरेंद्र पाटनवार, ग्राम पंचायत बोइदा की अध्यक्ष हेमलता जगत, पूर्व मंडल अध्यक्ष दुष्यंत शर्मा, रघुराज सिंह, चंद्रिका प्रसाद उईके, राम नारायण उइके समेत अधिक संख्या में समाज के आमजन उपस्थित रहे।

लक्ष्य निर्धारित कर कड़ी मेहनत करें, सफलता अवश्य मिलेगी : एसपी पल्लव

श्रीकंचनपथ न्यूज

कवर्धा। स्वामी विवेकानंद अकादमी, कवर्धा में पैरामिलिट्री फोर्स और अन्य सुरक्षा बलों में भर्ती की तैयारी कर रहे 450 युवाओं से मुलाकात के दौरान कबीरधाम जिले के पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव ने उन्हें अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने और कड़ी मेहनत के महत्व पर जोर दिया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विकास कुमार और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत जिले के विभिन्न ग्रामों के युवाओं को सीआईएसएफ, बीएसएफ, पुलिस, आर्मी, एसएसबी, आईटीबीपी, सशस्त्र बल, सब-इंस्पेक्टर, और अन्य सुरक्षा बलों में भर्ती के लिए निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण करपात्री ग्राउंड आउटडोर स्टेडियम कवर्धा और स्वामी विवेकानंद अकादमी में आयोजित किया जा रहा है, जहां उन्हें लिखित परीक्षा की तैयारी के लिए निशुल्क कोचिंग भी दी जा रही है। 12

अगस्त की सुबह, पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने प्रशिक्षणरत युवक-युवतियों से मुलाकात की और उन्हें प्रेरित किया। डॉ. पल्लव ने युवाओं से कहा कि वे अपने लक्ष्य पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करें, अनुशासन बनाए रखें और कड़ी मेहनत करें, क्योंकि सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

इस अवसर पर सभी उपस्थित 450 युवक-युवतियों और उनके ट्रेनर्स को प्रशिक्षण किट (टी-शर्ट और नेकर) प्रदान की गई, ताकि प्रशिक्षण के दौरान सभी में एकरूपता और अनुशासन बना रहे। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रशिक्षण के दौरान किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और सभी को समान अवसर मिल सके। इस मौके पर रक्षित निरीक्षक महेश्वर सिंह, थाना सिटी कोतवाली प्रभारी निरीक्षक लालजी सिंह और बड़ी संख्या में स्वामी विवेकानंद अकादमी के प्रशिक्षार्थी युवक-युवतियां भी उपस्थित रहे। यह पहल युवाओं को सशक्त बनाने और उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से की गई है, जिससे वे भविष्य में देश की सेवा करने में सक्षम हो सकें।

वित्त मंत्री चौधरी के पहल से प्रथम चरण में 1.67 करोड़ के निर्माण कार्यों को मिली स्वीकृति

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायगढ़। रायगढ़ के पटेल पाली की थोक सब्जी मंडी का वित्त मंत्री ओ.पी.चौधरी के पहल से कायाकल्प होने जा रहा है। इसके लिए प्रथम चरण में 1 करोड़ 67 लाख रुपए स्वीकृत किए गए हैं। वित्त मंत्री ओ.पी.चौधरी आज सुबह मंडी परिसर के निरीक्षण में पहुंचे। यहां उन्होंने थोक सब्जी विक्रेताओं से मुलाकात कर चर्चा की और पटेलपाली में होने वाले निर्माण और मरम्मत कार्यों के बारे में अधिकारियों से विस्तार से जानकारी ली और इस संबंध महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए।

वित्त मंत्री श्री ओ.पी.चौधरी ने कहा कि पटेल पाली मंडी सब्जियों और फ्लों के लिए रायगढ़ जिले का प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। इसे मॉडल मंडी के रूप में तैयार कर यहां आने वाले किसानों के लिए तमाम जरूरी बुनियादी

सुविधाएं तैयार की जाएंगी। जिससे किसानों को सुविधाजनक माहौल मिलने के साथ ही उनके व्यापार को भी बढ़ावा मिले। उन्होंने पटेल पाली मंडी में चबूतरे में स्टांप कांक्रीटीकरण करने के निर्देश दिए जिससे चबूतरे मजबूत और आकर्षक बने। इसके साथ ही चबूतरे के ऊपर कवरशेड बनाने के निर्देश दिए। गेट से अंदर आने वाली सड़क को बीटी रोड बनाने के लिए कहा। परिसर में एक बड़ा गोदाम और किसान सदन तथा कैंटीन भी तैयार करने के निर्देश उन्होंने दिए। इसके साथ ही यहां पर एटीएम शुरु करने के लिए भी कहा। वित्त मंत्री ओ.पी.चौधरी ने अधिकारियों को पूरी गुणवत्ता के साथ निर्माण कार्यों को समय-सीमा में पूरा कराने के निर्देश देते हुए कहा कि इसमें किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए।

गौरतलब है कि पटेलपाली थोक सब्जी और फ्ल मंडी का कायाकल्प कर इसे मॉडल मंडी के रूप में विकसित किया जाएगा। वित्त मंत्री ओ.पी.चौधरी के प्रयासों से इसके लिए 1 करोड़ 67 लाख रुपए की स्वीकृति छ.ग.राज्य कृषि विपणन बोर्ड से मिली है। जिससे यहां आने वाले किसानों और सब्जी और फ्ल के क्रेता-विक्रेताओं को सभी जरूरी सुविधाएं यहां मिल सके। स्वीकृति उपरांत अब निविदा की प्रक्रिया पूरी कर निर्माण कार्य शुरू किए जायेंगे। निरीक्षण के दौरान नगर निगम आयुक्त सुनील चंद्रवंशी, एसडीएम रायगढ़ प्रवीण तिवारी, प्रभारी सहायक आयुक्त महेश शर्मा सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी व थोक सब्जी विक्रेता संघ के पदाधिकारी और व्यापारी सहित कृषकगण उपस्थित रहे।

पटेल पाली मंडी के लिए स्वीकृत कार्यों में 07 छायादार चबुतरा का मरम्मत एवं नवीनीकरण कार्य किया जायेगा। परिसर में निर्मित सी.सी.रोड की मरम्मत के साथ यहां वाहनों की पार्किंग का निर्माण भी इसमें शामिल है। पटेल पाली सब्जी मंडी प्रांगण में स्ट्रीट लाईट एवं हाई मास्क लाईट की मरम्मत के साथ नवीनीकरण का कार्य किया जायेगा। इसके अलावा मेन गेट, चेक पोस्ट स्थापित करने के साथ काऊ केचर, बूम बेरियर और परिसर में सी.सी.टी.वी.कैमरा लगाने का कार्य व कम्प्यूटर सेट, तड़ित चालक लगाने का काम होगा।

साहित्य भवन के विस्तार के लिए उद्योग मंत्री ने की 20 लाख की घोषणा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। वाणिज्य, उद्योग और श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन आज कोरबा जिले के घंटाघर स्थित पं मुकुटधर पांडेय साहित्य भवन समिति कोरबा द्वारा आयोजित अभिनंदन और पुस्तक विमोचन समारोह में शामिल हुए। मंत्री श्री देवांगन ने कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा की पूजा-अर्चना कर किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित साहित्यकारों ने मंत्री श्री देवांगन का शॉल व श्रीफ्ल भेंट कर अभिनंदन किया।

इस अवसर पर पूर्व महापौर जोगेश लांबा, शहर के साहित्यकार और समिति संरक्षक मो. युनुस दानियालपुरी, कमलेश यादव, मुकेश चतुर्वेदी, अध्यक्ष दिलीप अग्रवाल, विजय राठौर, कृष्ण कुमार चंद्रा, बलराम राठौर, जितेंद्र वर्मा और सुश्री अंजना सिंह सहित अन्य साहित्यकार उपस्थित थे।

मंत्री देवांगन ने साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहा की हम तो स्कूल, कॉलेज में सामान्य तौर पर सिर्फ पुस्तकों को अध्यन करते हैं, लेकिन उन पुस्तकों लिखने वाले लेखक, साहित्यकारों की इसके पीछे बहुत सारी मेहनत होती है।

एक-एक शब्द के मायने के हिसाब से उन्हें माले की तरह गूथ कर पुस्तक के माध्यम से हम तक पहुंचाते हैं। इस अवसर पर तीनों साहित्यकारों के पुस्तक क्रमश: बहतरीन के दुलरवा, मधु मंजरी और पारस पखना का विमोचन किया। कार्यक्रम के दौरान साहित्य समिति द्वारा मंत्री श्री देवांगन से साहित्य भवन में विभिन्न विकास और विस्तार कार्य करने की मांग करने पर उन्होंने विधायक निधि से तत्काल 20 लाख रूपए की देने की घोषणा की।

जटगा पुलिस ने स्कूल में सजग कोरबा के तहत जागरूकता अभियान चलाया

कोरबा। पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के दिशा निर्देशन में कोरबा ज़िले में सजग कोरबा के तहत जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। थाना,चौकी प्रभारीगण के द्वारा उनके थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले स्कूल,कॉलेज में जाकर बच्चों को जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में चौकी जटगा के द्वारा हायर सेकेण्डरी स्कूल जटगा में बच्चों को सजग किया गया। बच्चों को सड़क दुर्घटनाओं की संख्या अधिक होने की बात बताते हुए लोगो को शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाने एवं यातायात नियमों का पालन करने को कहाँ गया। हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग करने एवं मालवाहक गाड़ियों में सवारी नहीं बैठाने के संबंध में भी बताया गया।

खास खबर

दुर्ग में घर में घुसकर चाकू से हमलाः आदतन अपराधी निकला आरोपी

भिलाई। दुर्ग जिले के भिलाई नगर पुलिस ने बजरंग चौक रुआबांधा स्थित एक मकान में घुसकर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी आदतन अपराधी किस्म का है। उसके खिलाफ अलग-अलग थानों में 16 से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं।

आरोपी पारस मंडल उर्फ बिट्टू (25) बजरंग चौक का निवासी है। दुर्गेश जोशी (16) ने उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। उसने पुलिस को बताया कि, 10 अगस्त की रात साढ़े 8 बजे वो लोग अपने घर पर थे। इसी दौरान पारस मंडल उर्फ बिट्टू ने घर में घुसकर दुर्गेश पर चाकू से हमला कर जख्मी कर दिया। इसके बाद घर के लोग दुर्गेश को लेकर थाने पहुंचे। दुर्गेश ने भिलाई नगर पुलिस में पूरी जानकारी दी। पुलिस ने उसका मुलाहिजा कराया और उसके बाद आरोपी बिट्टू के खिलाफ धारा 296, 333,109 बीएनएस 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। मामला दर्ज करने के बाद पुलिस की एक टीम रुआबांधा पहुंची। वहां पता चला कि बिट्टू घर से भाग गया है। इसके बाद पुलिस की टीम ने जगह-जगह छापेमारी की। पुलिस को सूचना मिली की आरोपी अपने घर रात में आया है। इसके बाद पुलिस ने उसे तड़के छापेमारी कर गिरफ्तार किया। इसके बाद आरोपी को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

ओडिशा से गांजा तस्करी करने वाले दो अंतरराज्यीय तस्कर गिरफ्तार, 7 किलो गांजा जब्त

रायपुर। पुलिस ने गांजा तस्करी करते महाराष्ट्र और उत्तरप्रदेश के दो अंतर्राज्यीय तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी ओडिशा से गांजा को लेकर जा रहे थे। इस दौरान रायपुर के टिकरापारा थाना क्षेत्र में स्थित भाठागांव बस स्टैंड के पास पुलिस ने रंगे हाथ गांजे के साथ दोनों आरोपी को पकड़ा। इनके कब्जे से लगभग सात किलो गांजा जब्त किया है। इसकी कीमत एक लाख 19 हजार रुपए बताया जा रहा है।

एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट अंतर्गत गठित नारकोटिक्स सेल की टीम को सूचना मिली कि टिकरापारा क्षेत्रांतर्गत भाठागांव स्थित न्यू बस स्टैण्ड पास दो व्यक्ति अपने पास बैग में गांजा रखें है। कहीं जाने की फिराक में है। एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट की टीम ने मुखबीर के बताये हुलियों के व्यक्तियों की पतासाजी करते हुए व्यक्तियों को चिन्हांकित कर पकड़ा। पूछताछ में व्यक्तियों ने अपना नाम रितेश घोटरे निवासी पनवेल (महाराष्ट्र) और कमल राजपूत निवासी हरदोई (यूपी) का होना बताया।

टीम के सदस्यों ने उनके पास रखें बैग की तलाशी लेने पर बैग में गांजा रखा होना पाया गया। जिस पर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुल 6.72 किलोग्राम गांजा कीमती लगभग एक लाख जब्त कर आरोपियों के खिलाफ थाना टिकरापारा में अपराध क्रमांक 634/24 धारा 20बी नारकोटिक का अपराध पंजीबद्ध कर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई किया गया।

पति और प्रेमी ने कर दी महिला की हत्या, दृश्यम मुवी देखकर की थी प्लानिंग, 21 दिन बाद पकड़ाए आरोपी

कबीरधाम जिले के साहसपुर लोहारा थाना क्षेत्र का है यह सनसनी खेज मामला

श्रीकंचनपथ न्यूज

कबीरधाम। छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में हत्या का एक सनसनी खेल मामला सामने आया है। 20 दिन पहले लापता हुई महिला को उसके पति व प्रेमी ने मिलकर मार डाला। खास बात यह है कि महिला की हत्या कर शव को ठिकाने लगाने के लिए दोनों ने अजय देवगन की दृश्यम फिल्म देखी। पूरे एक माह की प्लानिंग के बाद वारदात को अंजाम दिया। इस मामले पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर धारा- 103(1), 61(2)(क), 238(ख) भारतीय न्याय संहिता के तहत कार्रवाई की है।

हत्या का यह खौफनाक मामला कबीरधाम जिले के साहसपुर लोहारा क्षेत्र का है। दरअसल पुलिस के पास 20 जुलाई 2024 को गांव कल्याणपुर निवासी रामखिलावन साहू ने एक रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रामखेलावन साहू ने बताया कि उनकी बेटी ग्वालिन साहू (28) बीते 18 जुलाई को घर से पेशी के लिए कवर्धा जा रही थी। सुबह 11 बजे वह घर से निकली थी। इसके बाद वह घर वापस नहीं आई। इसके बाद काफी तलाश की गई और परिचितों से पूछने के बाद थाने में रिपोर्ट कराने पहुंचे हैं।

पुलिस ने गुमशुदा की रिपोर्ट लिखकर जांच शुरू कर दी।

जांच के दौरान पुलिस महिला के भाई मुकेश साहू से पूछताछ की। पुलिस पूछताछ में मुकेश ने बताया कि ग्वालिन बाई साहू की शादी गांव चिमागोदी निवासी लुकेश साहू से हुई थी। इनके तीन बच्चे हैं, जिनमें से दो लड़की एक लड़का है। लुकेश साहू अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह करता था इस वजह से उसने तीन साल पहले ग्वालिन साहू को छोड़ दिया था। तब से वह अपने बच्चों के साथ कल्याणपुर में पिता के घर पर रह रही है। इसबीच बहन ग्वालिन बाई ग्राम चिमागोदी के राजाराम साहू के पास चली गई थी, जिसे राजाराम साहू ने घोटिया रोड कवर्धा में किराये के मकान में रखा था।

भरण पोषण के लिए कोर्ट में दायर की थी याचिका

पूछताछ में महिला के भाई ने बताया कि उसकी बहन ने अपने पति लुकेश साहू से अपने व बच्चों के लिए भरण-पोषण के लिए कवर्धा कोर्ट में याचिका दायर की थी। जिस पर कोर्ट ने तीनों बच्चों के नाम पर 4,500 रुपए मासिक खर्च आदेश दिया था, जिसका पैसा समय-समय पर लुकेश साहू कोर्ट में जमा करता था। 18 जुलाई को भरण पोषण का पैसा लेने बहन ग्वालिन स्कूटी वाहन क्रमांक सीजी 09 जेक्यू 9044 से कवर्धा गई थी, जो वापस घर नहीं आई। इसके बाद पुलिस ने जांच का एंगल बदला। पुलिस का शक महिला के पति और प्रेमी की ओर घूम गया।

पति ने एक बार और प्रेमी ने चार बार देखी थी दृश्यम फिल्म, फिर दिया वारदात को अंजाम

पुलिस ने संदेह के आधार पर महिला के प्रेमी राजाराम साहू (26) और लुकेश साहू (29) को हिरासत में लिया और पूछताछ की। पुलिस की पूछताछ से दोनों टूट गए और सारी सच्चाई उगल दी। आईपीडीआर, सीडीआर के आधार पर पूछताछ की। तब दोनों ने बताया कि वे ग्वालिन बाई साहू से तंग आ गए थे और इसलिए उससे छुटकारा पाना चाह रहे थे, जिसके लिए लगभग एक महीने से प्लान बना रहे थे। इस बीच राजाराम ने चार बार और लुकेश ने एक बार दृश्यम फिल्म देखी, ताकि हत्या कर शव को ठिकाने लगाकर पुलिस से बचा जा सके। इसके बाद दोनों ने 19 जुलाई को ग्वालिन बाई साहू को घानीखुटा घाट के जंगल में ले गए। वहां उसकी साड़ी से गला दबाकर हत्या की और शव को दफ्ना दिया। आरोपियों की निशानदेही पर मृतका के शव को बरामद कर लिया गया। आरोपियों ने स्कूटी व अन्य सामान को कर्रानाला बांध में फेंक दिया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया है।

जमीन देखने बुलाकर ब्रोकर से 5 लाख की लूट, कैश-सोने की चेन लेकर भागे आरोपी

श्रीकंचनपथ न्यूज

सरगुजा। सरगुजा जिले के डांडगांव में जमीन देखने आए ब्रोकर से कथित जमीन मालिक और अन्य युवकों ने 3 लाख रुपए नकद और सवा दो लाख रुपए के सोने का चैन लूटकर भाग निकले। ब्रोकर ने मामले की रिपोर्ट उदयपुर थाने में दर्ज कराई है। पुलिस ने चार अज्ञात लोगों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

जानकारी के मुताबिक, मुंगेली निवासी नवल किशोर जायसवाल जमीन खरीद-ब्रिकी का काम करता है। एक माह पूर्व जमीन खरीद-बिक्री को लेकर उनकी बात एक युवक से हुई। करीब 20 दिनों पूर्व फोन करने वाले युवक ने नवल किशोर जायसवाल को चोटिया टोल प्लाजा के पास बुलाया। उसने जमीन मालिक बताकर एक युवक से परिचय कराया। जमीन मालिक ने जमीन दिखाने के बाद सौदा तय करने के लिए कहा था।

जमीन देखने के लिए बुलाकर लूटा

नवल किशोर जायसवाल को जमीन मालिक ने शुक्रवार को फोन किया और शनिवार को जमीन देखने के लिए आने के लिए कहा। नवल किशोर अपने साथ श्रीरंग जाधव और तमन्ना सोनी के साथ शनिवार को डांडगांव पहुंचे। धनगांव बाजार से आगे कथित जमीन मालिक ने नवल किशोर जायसवाल को मोटरसाइकिल में अकेले चलने के लिए कहा।

नवल किशोर को बाइक में बैठाकर वह मुख्य सड़क से करीब आधा किलोमीटर अंदर ले गया। जमीन देखने के दौरान वहां बाइक से दो युवक पहुंचे और नवल किशोर जायसवाल को चाकू दिखाकर उससे साथ मारपीट की।

मोबाइल भी लेकर भागे

युवक उसके पास रखे तीन लाख 6 हजार 500 रुपए नकद, सवा दो लाख रुपए की सोने की चैन, मोबाइल और दस्तावेज लूटकर फरार हो गए। युवकों के साथ जमीन दिखाने के लिए नवल किशोर को लेकर आया युवक भी फरार हो गया। लूटपाट की घटना के बाद नवल किशोर जायसवाल किसी तरह अपने साथियों के पास पहुंचे एवं उदयपुर थाने पहुंचकर घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई। रिपोर्ट पर पुलिस ने अज्ञात चार लोगों के खिलाफ धारा 309 का अपराध दर्ज किया है। आरोपियों का सुराग नहीं मिल सका है।

सीएएफआरक्षक ने भाभी के साथ मारपीट की, केस

कोरबा। पति के निधन के बाद बच्चों के साथ घर में रह रही भाभी से सीएएफ के आरक्षक ने मारपीट की। मामले में पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। मामला दर्री थाना अंतर्गत श्यामनगर लाटा का है, जहां निवासरत संतोष कश्यप कवर्धा में सीएएफका आरक्षक है। उसके भाई संजू कश्यप के निधन के बाद उसकी बेवा भाभी बैजंती कश्यप अपने चार बच्चों व सास के साथ संयुक्त घर में निवासरत है। पेशे से सरकारी स्कूल की शिक्षिका भाभी के घर में रहने से आरक्षक संतोष को एतराज है। बुधवार रात करीब 8 बजे आरक्षक संतोष नशे में घर पहुंचा। उसने भाभी को घर छोड़कर जाने कहते हुए मारपीट कर जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता ने दर्री थाने में पहुंचकर रिपोर्ट लिखाई। पुलिस ने मामले में आरोपी आरक्षक संतोष के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। इसी तरह बालकोनगर के रजगामार चौकी अंतर्गत कलदामार गांव में तीजराम राठिया ने भाभी केवला बाई द्वारा शादीशुदा बेटियों को घर पर रखने पर आपत्ति करते हुए गाली देते हुए डंडे से उसपर हमला कर दिया। उक्त मामले में भी आरोपी पर केस दर्ज किया गया है।

जशपुर से सरगुजा पहुंचे हाथी ने महिला को कुचला

घर के बाहर सूंड से पटककर मार डाला लुंड्रा वन परिक्षेत्र के कई गांवों में अलर्ट

श्रीकंचनपथ न्यूज

सरगुजा। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के बगीचा में चार लोगों को मौत के घाट उतारने के बाद रविवार को दंतैल हाथी सरगुजा जिले के में प्रवेश कर गया। हाथी ने लुंड्रा वन परिक्षेत्र में एक महिला को कुचलकर मार डाला। हाथी के सरगुजा वन परिक्षेत्र में घुसने के बाद वन विभाग ने मुनादी भी कराई थी। हाथी शाम करीब 7.30 बजे घर के बाहर निकली महिला को उठाकर पटकने के बाद कुचल दिया।

जानकारी के मुताबिक, शनिवार को जशपुर के बगीचा में हाथी ने एक घर में सो रहे चार लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। वहां से हाथी शनिवार को सरगुजा वन परिक्षेत्र में आ गया। हाथी के सरगुजा वन परिक्षेत्र में आने के बाद वन विभाग की ओर से लोगों को सतर्क किया जा रहा था। रविवार को हाथी विचरण करते हुए लुंड्रा वन परिक्षेत्र में पहुंच गया।

गेरसा के माझापारा में एक परिवार बस्ती से 200 मीटर दूर निवासरत था। वन विभाग की मुनादी के बाद महिला रामबाई (30) का पति शाम को अपने बच्चों को लेकर बस्ती में स्थित पुराने घर में आ गया था। शाम करीब 7.30 बजे रामबाई भी घर को बंद कर पुराने घर में जाने के लिए जैसे ही घर से बाहर निकली, उसका सामना जंगली हाथी से हो गया। दंतैल हाथी को देखकर रामबाई ने भागने की कोशिश की, लेकिन हाथी ने उसे दौड़ाकर सूंड से पकड़ लिया और उठाकर पटक दिया। महिला की मौके पर मौत हो गई। हाथी के गांव के पास आने से ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। लोगों ने शोर कर हाथी को भगाया।

घटना की सूचना पर वन अमला भी मौके पर पहुंच गया है। वन विभाग की ओर से लगातार हाथी से दूर रहने की सलाह दी जा रही है। हाथी के आने के बाद ग्राम गाजरमुंडा, गेरसा, झेराडीह, असकला सहित आसपास के गांववालों को सकर्त कर दिया गया है। वन विभाग के अनुसार दंतैल हाथी आक्रामक है और लोगों पर हमला कर सकता है। हाथी से बचने के लिए लोग समूह में एकत्र होकर गांव में रखवाली कर रहे हैं।

कार ने स्कूटी सवार युवकों को मारी टक्कर, एक की मौत और एक घायल

■ गौरेला-मरवाही-पेंड्रा जिले का मामला, रतनपुर केंदची मुख्यमार्ग पर हुआ हादसा

श्रीकंचनपथ न्यूज

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही। जिले में सड़क हादसे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। एक बार फिर एक सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की जान चली गई है तो दूसरा गंभीर रूप से घायल है। जिसे प्राथमिक उपचार के बाद सिम्स बिलासपुर रेफर कर दिया गया है।

पूरा मामला जिले के खोडरी चौकी क्षेत्र के रतनपुर केंवची मुख्यमार्ग के बनझोरखा मोड़ का है। जहां पर आज बिलासपुर जिले के तखतपुर के आजाद नगर वार्ड क्रमांक 5 के रहने वाले लगभग 20 युवक दस अलग-अलग मोटरसाइकिल से तखतपुर से मध्यप्रदेश के अमरकंटक जाने को निकले थे। सभी युवक आगे-पीछे अपनी अपनी मोटरसाइकिल रखकर चल रहे थे। इनमें से एक स्कूटी में राहुल सूर्यवंशी और सुखदेव कुर्रे भी चल रहे थे। उसी दौरान बनझोरखा मोड़ के पास जैसे ही इनकी स्कूटी पहुंची ही थी कि उसी

समय विपरीत दिशा से आ रही एक अज्ञात कार ने स्कूटी सवार को जोरदार टक्कर मारी। जिससे राहुल सूर्यवंशी, निवासी आजाद नगर वार्ड क्रमांक 5 तखतपुर की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं सुखदेव कुर्रे गंभीर रूप से घायल हो गया था।

जिसके बाद अन्य साथियों ने तत्काल 108 की मदद से खून में लथपथ दोनों को जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां पर डॉक्टरों ने राहुल को जांच के बाद मृत घोषित कर दिया तो सुखदेव कुर्रे को सिर और एक पैर में गंभीर चोट को देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद बिलासपुर सिम्स रेफर कर दिया। वहीं अन्य साथियों के द्वारा बताया गया कि वे लोग इसी तरह से हर रविवार को तखतपुर से अमरकंटक आते हैं। जहां रात्रि में विश्राम कर सोमवार को नर्मदा उद्गम से जल लेकर भोलेनाथ का जलाभिषेक कर वापस घर चले जाते हैं। फिलहाल गौरेला पुलिस अस्पताल से मिले मेमो के आधार पर मर्ग कायम कर शव को सुरक्षित रखकर पोस्टमार्टम करने के बाद परिजनों को सौंपने की बात कह रही है। वहीं घटना की जानकारी मिलते ही पूरे तखतपुर के आजाद नगर वार्ड क्रमांक 5 में मातम पसरा हुआ है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

कबीरधाम में सवारियों से भरी पिकअप पलटी, बालिका की मौत व 12 लोग घायल; सभी मंदिर से लौट रहे थे

कबीरधाम। भोरमदेव थाना क्षेत्र के छपरी गांव से सरोदा बांध जाने वाले रोड पर सिंगपुर गांव के पास एक पिकअप पलट गई। बताया जा रहा है कि पिकअप में करीब 20 से 22 लोग बैठे थे। पिकअप पलटते ही चीख-पुकार मच गई। हादसे में एक बालिका की मौत हो गई। वहीं, 12 लोग घायल हो गए।

जानकारी अनुसार, बेमेतरा जिले के देवरबीजा पुलिस चौकी क्षेत्र के ग्राम किरकी से करीब 20 से 22 लोग पिकअप में बैठकर भोरमदेव मंदिर में दर्शन के लिए गए थे। वे मंदिर में दर्शन कर शाम करीब 3.30 बजे वापस हुए। इसी दौरान ग्राम सिंगपुर के पास पिकअप पलट गई। मौके पर पहुंची भोरमदेव थाना पुलिस व डायल 112 की टीम ने 12 घायलों को कवर्धा के जिला अस्पताल में भर्ती कराया। हादसे में 11 वर्षीय बालिका वैष्णवी पुत्री सुरेन्द्र साहू निवासी ग्राम किरकी की मौत हो गई है।

सभी घायल का उपचार जिला अस्पताल कवर्धा में चल रहा है। सभी खतरे से बाहर हैं। वाहन चालक दालू वर्मा मौके से फरार हो गया है। इस मामले में पुलिस ने एफआईआर दर्ज की जा रही है। मई माह में भी इसी तरह पिकअप पलटने से 19 लोगों की मौत हो गई थी। यह हादसा कुकदूर थाना क्षेत्र के ग्राम बाहपानी के पास हुआ था। पिकअप में बैठे लोग जंगल से तेंदूपत्ता तोड़कर अपने गांव सेमरहा आ रहे थे।

बीजापुर में तीन नक्सली विस्फोटक के साथ गिरफ्तार, टिफिन बम बरामद

श्रीकंचनपथ न्यूज

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। यहां गंगालूर पुलिस, डीआरजी व बस्तर फाइटर की संयुक्त पार्टी बुरजी पुसनार के जंगल से तीन नक्सलियों को विस्फोटक के साथ गिरफ्तार किया है। इन नक्सलियों के पास जिलेटिन की छड़, टिफिन बम सहित अन्य नक्सल सामग्री बरामद किया गया है। पकड़े गए नक्सलियों के विरुद्ध गंगालूर थाना में वैधानिक कार्रवाई के बाद न्यायिक रिमांड पर न्यायलय में पेश किया गया है।

मिली जानकारी के अनुसार नक्सल विरोधी अभियान के तहत डीआरजी, बस्तर फाइटर व गंगालुर थाना की संयुक्त पार्टी को सफलता मिली है। संयुक्त पार्टी ने बुरजी पुसनार के जंगल से जगती पुनेम उर्फ जकती उर्फ भीमा पिता लखमा पुनेम निवासी बड़े पारा पुसनार, सुकारू पुनेम उर्फ सुखराम पिता मासा पुनेम निवासी पेद्दापारा पुसनार व गुड्डा पुनेम पिता दोसेल पुनेम निवासी गोरगेपारा पुसनार थाना गंगालूर को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से टिफिन बम, जिलेटिन छड़, नक्सल पर्चे, इलेक्ट्रिक फ्यूज, तार बरामद किए गए हैं। पकड़े गए नक्सली आईईडी लगाने, मार्ग अवरुद्ध करने व पम्पलेट-बैनर लगाने की घटनाओं में शामिल थे।

भिलाई की सबसे बड़ी चुड़ी की दुकान
निखार बैंगल
मो.- 9826186026
Shop-47, 'A' Market, Sec-6, Bhilai Nagar, Distt., Durg (C.G.)

भारतीय बैग हाउस
फैंसी ट्राली, स्कूल बैग, ऑफिस बैग, सफर बैग, लेपटॉप बैग, फैंसी छतरी, रेनकोट इत्यादि के विक्रेता
VIP happy journey
AMERICAN TOURISTER
कृष्णा टाकीज रोड, बैंक ऑफ बडौदा के बाजू में रिसाली भिलाई, संजय गुप्ता : 93003-77572

भिलाई मसाला उद्योग
शुद्ध कुटे हुए मसाले, पापड़, अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी का सामान इत्यादि
128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन. 2284508, मो. 9826137766

राकेश ट्रेडर्स
विगत 6 वर्षो से यह दुकान पानी टंकी के सामने स्थानांतरित हो गई है।
Dealers
Marbles, Grinight, Black Stone, Nano & Double Charge Verified Tiles Digital Wall & Floor Tiles Cement Coloru etc.
Rakesh Sahu
सप्लाई रेट पर माल उपलब्ध 9302443750, 9907127357
Krishna Talkies Road, Beside Hariom Furniture, Risali, Bhilai - 490006

- शासकीय नवीन महाविद्यालय ठेलकाडीह का नाम संत गुरू घासीदास बाबा के नाम पर रखने की घोषणा
- सोनेसरार, साकरदाहरा, मोतीपुर में सतनाम भवन निर्माण एवं सतनाम भवन राजनांदगांव में मंच निर्माण के लिए 10-10 लाख रूपए की मंजूरी
- शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज राजनांदगांव में ममतामयी मिनीमाता की प्रतिमा लगाने के लिए 5 लाख रूपए की घोषणा

ममतामयी मिनीमाता ने आजीवन नारी शक्ति को बढ़ाने, अस्पृश्यता को दूर करने का कार्य किया

संत गुरु घासीदास बाबा के विचार व संदेश प्रासंगिकः विष्णु देव साय

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय पऽश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडिटोरियम राजनांदगांव में आयोजित ममतामयी मिनीमाता निर्वाण दिवस एवं जिला स्तरीय शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, सांसद संतोष पाण्डेय, विधायक आरंग गुरू खुशवंत साहेब एवं अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस मौके पर शासकीय नवीन महाविद्यालय ठेलकाडीह का नाम संत गुरू घासीदास बाबा के नाम पर रखने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम सोनेसरार, डोंगरगांव विकासखड के ग्राम साकरदाहरा, राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम मोतीपुर में सतनाम भवन निर्माण एवं सतनाम भवन राजनांदगांव में मंच निर्माण के लिए 10-10 लाख रूपए तथा शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज राजनांदगांव में ममतामयी मिनीमाता की प्रतिमा स्थापना के लिए 5 लाख रूपए दिए जाने की घोषणा की।

इस अवसर पर सतनामी समाज द्वारा मुख्यमंत्री को साफा पहनाकर आत्मीय अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री ने सभी को हर घर तिरंगा कार्यक्रम अंतर्गत राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के सम्मान के लिए शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने ममतामयी मिनीमाता को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया। उन्होंने जिला सतनामी सेवा समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई दी और कहा कि सभी संत गुरू घासीदास बाबा के पथ पर चलते हुए सतनामी समाज को शिक्षा एवं विकास के हर क्षेत्र में आगे बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि देश की आजादी के बाद ममतामयी मिनीमाता पहली महिला सांसद रही हैं। अविभाजित मध्यप्रदेश में कार्य करते हुए उन्होंने आजीवन नारी शक्ति को आगे बढ़ाने, अस्पृश्यता को दूर करने का कार्य किया।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि संत गुरू घासीदास बाबा ने 18वीं सदी में मनखे-मनखे एक समान का संदेश दिया तथा समाज में व्याप्त छूआ-छूत एवं भेदभाव को दूर करने के लिए उनके संदेश आज भी मार्गदर्शक एवं प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि संत गुरू घासीदास बाबा के विचार एवं उनके संदेशों का अनुकरण करते हुए छत्तीसगढ़ सरकार मोदी की गारंटी को पूरा करने का कार्य कर रही है। सरकार द्वारा किसानों, महिलाओं, युवाओं एवं विभिन्न वर्गों के हित में कार्य किया जा रहा है। रामलला दर्शन, तेंदूपश्रा संग्रहण के अंतर्गत 5500 रूपए मानक बोरा पारिश्रमिक जैसी योजनाओं से आम जनता को लाभ मिल रहा है।

संत गुरू घासीदास बाबा का आर्शीवाद ऐसे ही बना रहे और हम आम जनता के हित में कार्य कर सकें। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह द्वारा गिरौदपुरी में जैतखाम के निर्माण, प्रदेश में सतनामी समाज के लिए भवन, सांस्कृतिक पंथी नृत्य को बढ़ावा देने के लिए उनके अवदानों को स्मरण किया।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि ममतामयी मिनीमाता के योगदान से समाज में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। उन्होंने महिलाओं के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है और उनका आत्मविश्वास बढ़ाया है। वर्ष 1952 में पहली महिला सांसद के रूप में उन्होंने अस्पृश्यता को दूर करने के लिए कानून बनाने तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ का नेतृत्व किया।

सतनामी समाज तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि गिरौदपुरी में जैतखाम के निर्माण के लिए मैं निमित्त बना, इस बात की मुझे खुशी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विभिन्न योजनाएं देश को विकास पथ पर आगे ले जा रही हैं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय गांव, गरीब एवं किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 3100 रूपए प्रति क्विंटल धान, 2 साल का धान का बकाया बोनस 3716 करोड़ रूपए का भूगतान, महतारी वंदन योजना के तहत 70 लाख माताओं-बहनों को हर महीने 1000 रूपए देने की योजना से सभी लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने आम जनता के लिए जीवन भर का रास्ता बनाया है। आने वाले समय में मुख्यमंत्री के नेतृत्व में और भी अच्छे कार्य होंगे और प्रदेश उन्नति की दिशा में आगे बढ़ेगा।

सांसद संतोष पाण्डेय ने कहा कि सतनामी समाज अन्य सभी समाज को साथ लिए समरसता एवं सद्भावना के साथ आगे बढ़ते जा रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री को राजनांदगांव जिले के लिए विशेष स्नेह के प्रति आभार प्रगट किया। उन्होंने कहा कि हम सब संत गुरू घासीदास बाबा के बताए हुए मार्ग मनखे-मनखे एक समान के अनुसार चले। मुख्यमंत्री इसी मंशा के अनुरूप कार्य कर रहे हैं। उन्होंने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकानाएं दी।

विधायक आरंग गुरू खुशवंत साहेब ने कहा कि ममतामयी मिनीमाता ने बाल विवाह को रोकने, अस्पृश्यता का निवारण करने तथा समाज के हित में कार्य किया है। उन्होंने कहा कि सतनामी समाज द्वारा संत गुरू घासीदास बाबा के मनखे-मनखे एक समान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बड़ी संख्या में आवास का निर्माण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले अनुसूचित जाति एवं जनजाति के हितग्राही इससे लाभान्वित हुए हैं।

सतनामी समाज की उन्नति एवं विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सभी को संत गुरू घासीदास बाबा के बताए मार्ग पर चलना है। मदिरापान तथा गुटखा जैसे व्यसन से दूर रहना है। इस अवसर पर पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, विधायक डोंगरगढ़ श्रीमती हर्षिता बघेल, पूर्व विधायक रामजी भारती, पूर्व मंत्री धनेश पाटिला, पूर्व विधायक विनोद खांडेकर, सचिन बघेल, खूबचंद पारख, नीलू शर्मा, रमेश पटेल, भरत वर्मा, कोमल राजपूत, दिनेश गांधी, रिखीराम गेण्ड्रे, कुलबीर सिंह छाबड़ा, चेतन चंदेल, पार्थ गेंड्रे एवं अन्य जनप्रतिनिधि, जिला सतमानी सेवा समिति के अध्यक्ष युवराज दास ढ़ीरहेर, उपाध्यक्ष कमलेश्वर सांडे, उपाध्यक्ष महिला प्रतिमा बंजारे, महामंत्री कमल कुमार लहरे, कोषाध्यक्ष संजीव बंजारे, सचिव ऋषिराज खरे सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग उपस्थित थे।

साहू समाज हर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रहा है : अरुण साव

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। उप मुख्यमंत्री अरुण साव छत्तीसगढ़ प्रदेश साहू अधिकारी-कर्मचारी सम्मेलन एवं सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में अपने उत्कृष्ट कार्यों से साहू समाज का नाम रोशन करने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों को सम्मानित किया।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि साहू समाज सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। हमारा समाज हर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रहा है। छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा समाज होने के नाते सभी समाजों को साथ लेकर चलने की जिम्मेदारी भी हमारी है। उन्होंने पहली बार आयोजित प्रदेश साहू अधिकारी-कर्मचारी सम्मेलन एवं सम्मान समारोह को ऐतिहासिक एवं गरिमामय बताते हुए इसके आयोजन के लिए समाज के पदाधिकारियों को बधाई दी।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने कहा कि साहू समाज को और ज्यादा संगठित होकर सही नेतृत्व के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। हमारे समाज की प्रतिभाओं को प्रदेश और देश की प्रतिभा बनाने की जिम्मेदारी समाज की है। साहू समाज को नई सोच और जज्बे के साथ आगे बढ़ना है। उन्होंने समाज के संगठन में महिला और युवा प्रकोष्ठ के साथ ही अन्य प्रकोष्ठों के गठन पर जोर दिया। छत्तीसगढ़ प्रदेश साहू संघ के अध्यक्ष टहल सिंह साहू ने कहा कि समाज के अधिकारी-कर्मचारी बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज को सही दिशा दिखाने का दायित्व बुद्धिजीवी वर्ग का है। साहू समाज ने पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए सार्थक कदम उठाए हैं। हमें आगे भी इसे जारी रखना है।

स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय राजधानी रायपुर में करेंगे ध्वजारोहण

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय राजधानी रायपुर के पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित मुख्य समारोह में प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण कर परेड की सलामी लेंगे। केन्द्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिला मुख्यालय में जब कि उप मुख्यमंत्री अरूण साव बिलासपुर में तथा उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा बस्तर में आयोजित मुख्य समारोह में ध्वजारोहण करेंगे। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण के लिए सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा आज मुख्य अतिथियों के नामों की सूची जारी कर दी गई है।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह राजनांदगांव में, मंत्री रामविचार नेताम सरगुजा में, मंत्री दयालदास बघेल महासमुंद में,

मंत्री केदार कश्यप दुर्ग में, मंत्री लखन लाल देवांगन कोरबा में, मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल बलौदाबाजार-भाटापारा में, मंत्री ओ.पी चौधरी जांजगीर-चांपा में, मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े बलरामपुर-रामानुजगंज में, मंत्री टंक राम वर्मा सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिला मुख्यालय में आयोजित मुख्य समारोह ध्वजारोहण कर परेड की सलामी लेंगे।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल गरियाबंद में, सांसद विजय बघेल बालोद में, सांसद संतोष पाण्डेय खैरागढ़-गंडई-छुईखदान, सांसद चिंतामणी महाराज जशपुर में, सांसद रूपकुमारी चौधरी बेमेतरा में, सांसद राधेश्याम राठिया रायगढ़ में, सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े सक्ती में, सांसद महेश कश्यप दंतेवाड़ा में, सांसद भोजराज नाग कांकेर में, सांसद देवेन्द्र प्रताप सिंह नारायणपुर जिला मुख्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि होंगे।

विधायक पुन्नु लाल मोहले मुंगेली में, धरम लाल कौशिक गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में, अमर अग्रवाल कबीरधाम में, अजय चंद्राकर धमतरी में, भैयालाल राजवाड़े सूरजपुर में, विक्रम उसेंडी बीजापुर में, राजेश मूणत मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में, किरण देव सुकमा जिला मुख्यालय में आयोजित मुख्य समारोह में करेंगे, जब कि विधायक रेणुका सिंह कोरिया में और लता उसेंडी कोण्डागांव जिला मुख्यालय में आयोजित समारोह में ध्वजारोहण करेंगी।

कृषि और किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है मोदी सरकारः मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में उच्च उत्पादन क्षमता वाली जलवायु अनुकूल व बायोफोर्टिफाइड फसलों की 109 किस्मों को जारी करने पर प्रसन्नता जताई है। उन्होंने कहा है कि इससे देश में कृषि और किसानों को लाभ होगा। धान की उन्नत किस्मों से छत्तीसगढ़ के किसान विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। फसल की इन नई किस्मों से छत्तीसगढ़ में विशेषकर धान का उत्पादन बढ़ेगा। इससे छत्तीसगढ़ के किसान उत्कृष्ट खेती के साथ और अधिक समृद्ध बनेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा कृषि और किसानों के कल्याण के लिए पूरी तत्परता से काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि कृषि वैज्ञानिकों ने धान की ऐसी किस्में तैयार की है, जिनके उत्पाद में 20 प्रतिशत कम पानी लगेगा। इसके अलावा दालों में अरहर और चने की 2-2, मसूर की 3 उन्नत किस्में किसानों को खेती के लिए उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री साय ने कृषि के क्षेत्र में अभिनव एवं क्रांतिकारी कार्य के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं कृषि वैज्ञानिकों का आभार जताते हुए देश के किसानों को बधाई एंव शुभकामनाएं दी है।

शासन की सभी योजनाएं धरातल पर दें दिखाईः विजय शर्मा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा की अध्यक्षता में आज ठाकुर प्यारेलाल पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान, निमोरा, रायपुर में छत्तीसगढ़ के सभी मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ), जिला पंचायत की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत चल रहे कार्यों की जिलेवार गहन समीक्षा की गई। उपमुख्यमंत्री शर्मा ने सभी सीईओ से कहा कि शासन की सभी योजनाएं धरातल पर दिखाई दें और निचले स्तर तक पहुंचे यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि कोई भी पात्र हितग्राही योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे।

पीएम आवास योजना को कार्ययोजना बनाकर तेजी से पूर्ण किया जाए : उपमुख्यमंत्री

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने प्रत्येक जिले के स्वीकृत, पूर्ण और अपूर्ण आवासों की स्थिति की जानकारी ली और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास निर्माण कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्ययोजना बनाकर इन्हें समय-सीमा के भीतर पूर्ण किया जाए। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि भविष्य में बड़ी संख्या में आवासों की स्वीकृति की संभावना है, इसके लिए पहले से तैयारी रखें। जहां आवास स्वीकृत हो रहे हैं, वहां मेंशन, मटेरियल सप्लायर, बैंक की उपलब्धता, सीएचसी और बैंक सखी की उपलब्धता की जानकारी पहले से सुनिश्चित करें। जहां ये सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, वहां कार्ययोजना बनाकर काम शुरू करें। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने पीएम जनमन योजना के तहत आदिवासी बहुल क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं सहित सभी प्रमुख योजनाओं का लाभ जनजातीय परिवारों तक पहुंचाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए राशि की कोई कमी नहीं होगी, और सभी ग्राम पंचायतों में आवास स्वीकृत किए जा रहे हैं। इन आवासों को तेजी से पूर्ण करने के लिए कार्ययोजना बनाएं। बैठक में प्रमुख सचिव निहारिका बारिक सिंह, सचिव राजेश सिंह राणा, संयुक्त सचिव तारन प्रकाश सिन्हा, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के संचालक रजत बंसल, पंचायत निदेशक प्रियंका ऋषि महोबिया, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और राज्य स्वच्छ भारत मिशन की मिशन संचालक जयश्री जैन, तथा सभी जिलों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत चल रहे कार्यों की भी समीक्षा की। उन्होंने मानव दिवस सृजन की उपलब्धि और लक्ष्य के विरुद्ध प्राप्त प्रगति की जानकारी ली। सिक्योर के तहत वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 में स्वीकृत कार्यों और 266 अनुमेय कार्यों की समीक्षा की गई। उपमुख्यमंत्री ने 77वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में प्रत्येक अमृत सरोवर स्थलों पर विशेष उत्सव आयोजित करने की तैयारी की जानकारी ली और सभी जिलों में इस कार्यक्रम को सफल बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने एरिया ऑफिसर्स मॉनिटरिंग विजिट ऐप के माध्यम से निरीक्षण को शत-प्रतिशत पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। समीक्षा के दौरान सामाजिक अंकेक्षण की प्रगति, निपटाए गए प्रकरणों एवं राशि वसूली, लोकपाल कार्यालय में दर्ज प्रकरणों पर पारित निर्णय और कार्रवाई रिपोर्ट की समीक्षा भी की गई। साथ ही समयबद्ध मजदूरी भुगतान और आधार आधारित भुगतान की प्रगति का भी मूल्यांकन किया गया। महात्मा गांधी नरेगा के अभिसरण से आंगनबाड़ी भवन निर्माण की भी समीक्षा की गई। बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत राज्य में कार्यरत बीसी सखियों, लखपति दीदी, स्व सहायता समूह की महिलाओं को न्यूनतम दर पर ऋण, जिले में लंबित अनुकम्पा नियुक्ति, ग्राम पंचायतों में कार्यरत ग्राम पंचायत सचिवों का अंशदायी पेंशन योजना के तहत मूल वेतन से 10 प्रतिशत राशि पोर्टल में जमा करने, जिला, जनपद एवं ग्राम पंचायत विकास योजना की प्रगति, और भारतनेट के माध्यम से इंटरनेट की उपलब्धता आदि कार्यों की भी समीक्षा की गई।

खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल ने ममतामयी मिनीमाता की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित किया

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल ने आज बेमेतरा जिले के नगर पंचायत नवागढ़ के बस स्टैण्ड में छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद ममतामयी मिनीमाता की पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम सर्वोच्च गुरु असम दास जी गुरुगोसांई खपरीडीह खुर्द के सानिध्य में संपन्न हुआ ।

खाद्य मंत्री श्री बघेल ने कार्यकम को सम्बोधित करते हुए कहा कि ममतामयी मिनी माता ने सतनामी समाज को आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किया। समाज को भी संगठित होकर शिक्षा, स्वास्थ्य, और हर क्षेत्र में युवाओं को आगे बढ़ाने समाज को एकजुट होकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को उंचा उठाने के लिए प्रयास किया था । खाद्य मंत्री ने समाज के लोगों को छत्तीसगढ़ की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने की बात कही। समाज द्वारा सतनाम भवन नवागढ़ से बस स्टैंड तक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। कार्यकम में पद्म श्री उषा बारले ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति दी गई।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक राजेश अग्रवाल द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि. छत्तीसगढ़ भवन, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित कर, 204 आकाशगंगा सुपेला, भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक राजेश अग्रवाल shreekanchanpath2010@gmail.com, Mo - 9303289950